एलेन गॉट्सचॉक
रॉय की विरासत:
भारत में विश्वव्यापी
नारीवाद और नव-
मानववाद
2026
Shalu Nigam

एलेन गॉट्सचॉक रॉय की विरासत:

भारत में विश्वव्यापी नारीवाद और नव-मानववाद

In Europe in the early thirties

Indian Renaissance Club

Delhi NCR

2026

2026

@ Shalu Nigam

Occasional Paper 26064

Indian Renaissance Club

Delhi, NCR

Cover Photo Courtesy: From *The World Her Village: Selected Writings and Letters of Ellen Roy*, Edited by Sibnarayan Ray, Ananda Publishers Pvt Ltd. Calcutta

Citation: Nigam Shalu (2026) Reclaiming the Legacy of Ellen Gottschalk Roy: Cosmopolitan Feminism and Radical Humanism in India, Occasional Paper 26064, Indian Renaissance Club, Delhi, NCR.

सारांश

यह कृति एलेन गॉट्सचॉक रॉय के बौद्धिक और राजनीतिक योगदानों का पुनर्मूल्यांकन करती है। परंपरागत रूप से, उन्हें एम. एन. रॉय की सहयोगी के रूप में प्रस्तुत किया जाता रहा है, पर वे विश्वव्यापी, अंतर्राष्ट्रीय नारीवादी विचारक और नव मानववाद (Radical Humanism) की प्रमुख रचनाकार थीं। उन्होंने संगठनात्मक कार्यों, प्रकाशनों और व्यवहार के माध्यम से आंदोलन को संस्थागत रूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे बीसवीं शताब्दी के राजनीतिक चिंतन के अंतर्राष्ट्रीय इतिहास में एक फासीवाद-विरोधी कार्यकर्ता, विचारक और दार्शनिक थीं।

एलेन गॉट्सचॉक रॉय का जीवन फासीवाद, युद्ध, निर्वासन (exile) और उपनिवेशवाद-विरोधी संघर्षों से प्रभावित था। उनके योगदान पूर्व और पश्चिम तथा राष्ट्रवाद और विश्ववाद के बीच की सीमाओं को चुनौती देते हैं। यह कृति Radical Democracy, रचनात्मक तर्कवाद, (Creative Rationalism) जन सरकार और अंतर्राष्ट्रीय नागरिकता जैसी उनकी प्रमुख धारणाओं का अन्वेषण कर यह तर्क देती है कि उनका कार्य एक स्वतंत्र, समान और न्यायपूर्ण विश्व की दृष्टि को व्यक्त करता है। उनके विश्वव्यापी नारीवाद ने महिला मुक्ति को स्वतंत्रता के व्यापक संघर्षों से जोड़ा।

यह कृति इस बात पर बल देती है कि विऔपनिवेशीकरण (Decolonization) और बहुसांस्कृतिक (multiculturalism) इतिहास लेखन के ढाँचे यूरोकेंद्रित आख्यानों को चुनौती देते हैं। लेकिन ये ढाँचे पुरुष-प्रधान इतिहासों को उजागर करते हैं और एलेन रॉय सहित अंतरराष्ट्रीय और विश्वव्यापी महिला विचारकों को हाशिए पर धकेलते हैं। यद्यपि एलेन गॉट्सचॉक रॉय आंदोलन की सह-संस्थापक थीं, इतिहास ने उनके योगदान को कमतर आँका। उनकी बौद्धिक विरासत को मज़बूत करने के लिए मानववाद, नारीवाद, और नागरिकता पर पुनर्विचार करना आवश्यक है। तेजी से ध्रुवीकृत हो रही समकालीन दुनिया में, उनका योगदान वैचारिक और राष्ट्रीय सीमाओं से परे लोकतंत्र और स्वतंत्रता की पुनर्व्याख्या करता है।

प्रस्तावना

भारतीय पुनर्जागरण के संदर्भ में, रेडिकल ह्यूमनिज़्म (नव मानववाद) के बारे में पढ़ते समय, मैंने एलेन गॉट्सचॉक रॉय और एवलिन ट्रेंट–एम.एन. रॉय की जीवन-साथियों–के नामों को पढ़ा। परन्तु पढ़ते समय समझ में आया कि हालाँकि ऐतिहासिक आख्यान रेडिकल ह्यूमनिज़्म को गढ़ने का श्रेय एम.एन. रॉय को देते हैं, लेकिन ऐसे विवरण एलेन गॉट्सचॉक के बौद्धिक और संगठनात्मक योगदानों को हाशिए पर धकेल देते हैं।

पश्चिम में जन्मी और वहीं शिक्षा प्राप्त करने वाली एलेन गॉट्सचॉक रॉय (1904-1960) ने विश्वबंधुत्व, वैश्विक नागरिकता और रचनात्मक स्वतंत्रता से जुड़े विचारों को विकसित किया। उनके शुरुआती जीवन को यूरोप में युद्ध, विस्थापन और निर्वासन के अनुभवों ने आकार दिया। उन्होंने भारत को अपनी राजनीतिक और बौद्धिक प्रतिबद्धता के केंद्र के रूप में चुना, जहाँ उन्होंने एम.एन. रॉय के साथ मिलकर रेडिकल ह्यूमनिज़्म का विस्तार करने के लिए अथक परिश्रम किया। एम.एन. रॉय की मृत्यु के बाद, वह भारत में ही रहीं और इस आंदोलन को बनाए रखने तथा संस्थागत रूप देने में एक अहम भूमिका निभाई। इस उद्देश्य के प्रति उनका असाधारण समर्पण दिसंबर 1960 में उनकी दुखद हत्या होने तक जारी रहा।

उपलब्ध अभिलेखों की पड़ताल करने से पता चलता है कि वह रॉय की केवल एक संगिनी ही नहीं, बल्कि रेडिकल ह्यूमनिज़्म की सह-निर्माता भी थीं। उन्होंने 'रेडिकल डेमोक्रेटिक पार्टी' और 'इंडियन रेनेसां इंस्टीट्यूट' की सह-स्थापना की, और इस आंदोलन से जुड़े प्रकाशन जैसे 'इंडिपेंडेंट इंडिया', 'द रेडिकल ह्यूमनिस्ट', 'द मार्क्सियन वे' और 'रेनेसां पब्लिकेशन्स' को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

विशेष रूप से, एम.एन. रॉय ने अपने आत्मकथात्मक लेखन या अपने अन्य कार्यों में अपने जीवन में आई महिलाओं को कोई श्रेय नहीं दिया। इसी तरह, भारत में उनके कई समकालीनों और उनके कई जीवनीकारों ने भी एलेन गॉट्सचॉक रॉय की पहचान को केवल "रॉय की पत्नी या संगिनी" तक सीमित कर दिया, जिससे

उनकी बौद्धिक विशिष्टता धूमिल हो गई और उनके महत्वपूर्ण योगदानों का अवमूल्यन हुआ।

विडंबना यह है कि अकादमिक जगत में भी, रॉय के व्यक्तिगत संबंधों, अंतरंगता और यौन जीवन पर ध्यान केंद्रित किया गया है, ताकि उनके "क्रांतिकारी हृदय" को उजागर किया जा सके और यह दिखाया जा सके कि किस प्रकार सहयोग के माध्यम से विश्वव्यापी ज्ञान का सृजन होता है। पर इस दृष्टिकोण ने उन महिलाओं के बौद्धिक, राजनीतिक और संगठनात्मक श्रम की उपेक्षा की, जिन्होंने उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया था। यह असंतुलन "प्रगति के पितृसत्तात्मक विरोधाभास" (Patriarchal Paradox of Progress) को दर्शाता है जो एक व्यापक इतिहास-लेखन पद्धति है जिसमें प्रभावशाली पुरुष विचारकों से जुड़ी महिलाओं को उनके बौद्धिक योगदानों के बजाय केवल उनकी घरेलू भूमिका, यौन संबंधों या भावनात्मक जुड़ाव के संदर्भ में ही याद किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप उनके योगदानों को इतिहास से मिटा दिया जाता है।

विस्मृतीकरण (Politics of Erasure) की यह राजनीति एक ऐतिहासिक प्रवृत्ति है, जैसा कि मैंने अन्यत्र भी स्पष्ट किया है। जिस तरह भारतीय संविधान की Founding Mothers के योगदान को नज़रअंदाज़ किया गया है, उसी तरह उन विदेशी महिलाओं के इतिहास को भी भुला दिया गया है, जिन्होंने भारत आकर इसे अपना बौद्धिक और राजनीतिक घर बनाया।

एलन गॉट्सचॉक रॉय की भूमिका को केवल एक पत्नी या समर्थक तक ही सीमित नहीं किया जा सकता। उनके जीवन और योगदान पर ध्यान केंद्रित करते हुए, यह कार्य उन्हें एक स्वतंत्र विचारक, आयोजक और दूरदर्शी के रूप में मानता है जिनके विचार लोकतंत्र, स्वतंत्रता, विश्वबंधुत्व (cosmopolitanism), पार-राष्ट्रीय नागरिकता (transnational citizenship) और गरिमा पर समकालीन बहसों में आज भी गूंजते हैं। उन्होंने 'रेडिकल ह्यूमनिज़्म' की अवधारणा तैयार की और उसे विकसित किया; विशेष रूप से उपनिवेशवाद-विरोध, लोकतंत्र, स्वतंत्रता और नैतिक राजनीति के संदर्भ

में। वह एक संस्था-निर्माता और विश्वबंधुत्ववादी (cosmopolitan) बुद्धिजीवी थीं, जिनका जीवन और कार्य सांस्कृतिक, राष्ट्रीय और राजनीतिक सीमाओं से परे था।

एलन गॉट्सचॉक रॉय के लेखन, सक्रियता और संस्थागत कार्यों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, यह कार्य उन चुनिंदा स्मृतियों, विलोपनों, चुप्पी और बहिष्करणों पर सवाल उठाता है, जो बौद्धिक इतिहास को आकार देते हैं। इसका उद्देश्य उनकी विरासत और 'रेडिकल ह्यूमनिज़्म' के इतिहास में उनके उचित स्थान को पुनः स्थापित करना है।

हालांकि अभिलेखीय सामग्री (archival material) कम ही उपलब्ध है, फिर भी उनके लेखन और प्रकाशनों का गहन अध्ययन यह बताता है कि वह नव मानववाद की सह-निर्माता और सह-वास्तुकार थीं। इसलिए, यह कार्य Indian Renaissance के लिए उनके अथक प्रयासों को दर्शाता है।

यह शोध कार्य अभिलेखीय कार्यों, दस्तावेज़ों और साहित्य की खोजबीन, अथवा लेखन कार्य के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय सहयोग के बिना ही संपन्न किया गया है। यह labour of love है जो Indian Renaissance के इतिहास को एक नारीवादी दृष्टिकोण से पुनः समझने की दिशा में एक कदम है। अभिलेखागार, विस्मृत लेखन और उपेक्षित इतिहासों की खोज में बिताए गए ये वर्ष इस दृढ़ विश्वास पर टिके रहे कि बौद्धिक इतिहास को उन महिलाओं के योगदान का नैतिक रूप से संज्ञान लेना चाहिए, जिन्हें उनके गहन योगदानों के बावजूद नज़रअंदाज़ किया गया है।

शालू निगम

3 जून

Contents

सारांश 4
प्रस्तावना 5
परिचय: एलेन गॉट्सचॉक रॉय: एक कॉस्मोपॉलिटन पॉलिटिकल थिंकर 9
विश्वव्यापी मूल और राजनीतिक चेतना का निर्माण 12
विश्वनागरिकता: एक जीवंत राजनीतिक अभ्यास 15
एलन रॉय एक विश्ववादी नारीवादी 18
राष्ट्र, संस्कृति और घरेलू सुधार से परे नारीवाद 20
एंटी-फ़ासिज़्म और क्रांतिकारी पॉलिटिक्स 23
शांति: सामाजिक और राजनीतिक पुनर्निर्माण 26
पार्लियामेंट्री फॉर्म की क्रिटिक के तौर पर रेडिकल डेमोक्रेसी 29
लोक-सरकार: लोकतांत्रिक बदलाव की एक रणनीति 32
साझेदारी: एक बौद्धिक सहयोग, न कि निर्भरता 35
एक संस्थागत और बौद्धिक परियोजना के रूप में रैडिकल ह्यूमनिज़्म 39
दार्शनिक तंत्र के रूप में मानववाद 42
भारत: एक राजनीतिक और बौद्धिक घर 45
रचनात्मक बुद्धिवाद और तर्क की नैतिकता 49
रेडिकल मानववाद की संरक्षकता और निरंतरता 52
एलन की मृत्यु और उनकी बौद्धिक विरासत 55
निष्कर्ष: आज एलेन रॉय क्यों मायने रखती हैं 58
References 61
लेखिका के बारे में 62

परिचय: एलेन गॉट्सचॉक रॉय: एक कॉस्मोपॉलिटन पॉलिटिकल थिंकर

> "इंसानी तरक्की की चाबी आज़ादी और सच की खोज में है, जो इंसानी फितरत की बुनियादी इच्छाएँ हैं; और इन इच्छाओं की संतुष्टि ही इंसानी क्रिएटिविटी और भलाई का सोर्स और कंटेंट है। ह्यूमनिज़्म की चाहत आज़ाद मर्दों और औरतों का एक कॉस्मोपॉलिटन समाज बनाने में मदद करना है - एक ऐसा समाज जिसमें पर्सनल ज़िंदगी, बर्ताव, सोशल रिश्ते और इंस्टीट्यूशन, व्यक्तिगत रचनात्मकता और समझदारी भरे सहयोग की भावना से प्रेरित हों। यही न्यू ह्यूमनिज़्म की मुख्य थीसिस है..."

भारत का इंटेलेक्चुअल इतिहास ज़्यादातर पुरुष नेशनलिस्ट लीडर्स को हाईलाइट कर के लिखा गया है, जिससे महिला एक्टिविस्ट और रिफॉर्मर की भूमिका कम हो गई है। खास तौर पर, ट्रांसनेशनल महिला एक्टर्स का योगदान इस में मुश्किल से फिट बैठता है। यह सेलेक्टिव हिस्टोरियोग्राफी एलेन गॉट्सचॉक रॉय[1] को मुख्य रूप से एम. एन. रॉय की पत्नी और सहयोगी के तौर पर याद करती है। इस तरह का Reductionist चित्रण उनके इंडिपेंडेंट इंटेलेक्चुअल और पॉलिटिकल रास्ते को नज़रअंदाज़ करता है।

---

[1] इस पेपर में, पहले रेफरेंस में "एलेन गॉट्सचॉक रॉय" का इस्तेमाल किया गया है, जबकि उसके बाद "एलेन रॉय" का इस्तेमाल किया गया है, जो उस नाम को दिखाता है जिसके तहत उन्होंने भारत में रेडिकल ह्यूमनिस्ट इंटेलेक्चुअल और पॉलिटिकल लाइफ में पब्लिश किया और हिस्सा लिया।
अन्य सन्दर्भ में, लेखक ने 'प्रगति का पितृसत्तात्मक विरोधाभास' patriarchal paradox of progress फ्रेज का इस्तेमाल यह बताने के लिए किया है कि कैसे रॉय और उनके बायोग्राफर्स ने उनके जीवन और काम में महिलाओं, खासकर एवलिन ट्रेंट और एलेन की अहम भूमिका को कमतर किया है। कृपया देखें, निगम शालू (2026) विमेंस इमैन्सिपेशन एंड फेमिनिस्ट प्रैक्सिस: रिक्लेमिंग द रेडिकल लिगेसी ऑफ एमएन रॉय, इंडियन रेनेसां क्लब, दिल्ली NCR

इस कमी को चुनौती देते हुए, यह काम यह तर्क देता है कि एलेन एक कॉस्मोपॉलिटन फेमिनिस्ट विचारक और नव मानववाद की एक बुनियादी सह-निर्माता और आर्किटेक्ट थीं। वह एंटी-फ़ासिस्ट (anti-fascist) एक्टिविस्ट, एडिटर, ऑर्गनाइज़र, इंटरनेशनलिस्ट और थ्योरिस्ट थीं। उनके विचार ट्रांसनेशनल विस्थापन, एंटी-फ़ासिस्ट संघर्ष और यूरोप और भारत में माइग्रेशन के उनके अनुभवों से बने थे। उनकी कॉस्मोपॉलिटन चेतना ने राष्ट्रवादी ढाँचों को चुनौती दी, उन्होंने इस धारणा पर सवाल उठाया कि नागरिकता, लोकतंत्र और फेमिनिज़्म को राष्ट्र-राज्य की पारंपरिक सीमाओं के भीतर ही आधारित होना चाहिए।

यह काम चार मुख्य तर्क देता है। पहला, एलेन रेडिकल ह्यूमनिज़्म की को-आर्किटेक्ट और सह-निर्माता थीं। दूसरा, उन्होंने रेडिकल डेमोक्रेसी का विचार विकसित किया, जो संसदीय प्रतिनिधित्व से आगे बढ़कर शिक्षा, जन भागीदारी और आर्थिक और राजनीतिक ढाँचों के विकेंद्रीकरण को भी शामिल करता है। तीसरा, उनके कॉस्मोपॉलिटन फेमिनिज्म ने महिलाओं की आज़ादी को इंपीरियलिज्म (imperialism) , पितृसत्ता (patriarchy) और दमन के खिलाफ संघर्षों से जोड़ा। और चौथा, उन्होंने भारत में अपनी ज़िंदगी नव मानववाद को संस्थागत करने में लगाई, और भारत को डेमोक्रेटिक और इंटेलेक्चुअल रिकंस्ट्रक्शन की जगह के तौर पर देखा।

एलन ने यह तर्क दिया कि डेमोक्रेटिक समाजों को नैतिक और ethical रूप से जागरूक लोगों को बढ़ावा देने की ज़रूरत है जो कट्टरता और तानाशाही सहित दमनकारी स्ट्रक्चर को खत्म कर सकें। इस फ्रेमवर्क में, रेडिकल ह्यूमनिज्म एक बदलाव लाने वाला प्रोजेक्ट है। उनके लिए, independence, freedom से अलग है। स्वतंत्रता (Independence) का मतलब है बंधन का न होना; जबकि आज़ादी (Freedom) में ऐसे हालात बनाना शामिल है जिनमें लोग आज़ादी से सोच सकें, नैतिक रूप से काम कर सकें और अपनी क्षमता का एहसास कर सकें।

यह पेपर उनके विचारों को नागरिकता पर बीसवीं सदी की बड़ी बहसों के अंदर रखता है, जहाँ फासीवाद, कॉलोनियलिज्म, युद्ध और हिंसा के जवाब में डेमोक्रेसी

और आज़ादी के सवालों को नए सिरे से परिभाषित किया गया था। एलेन के इंटेलेक्चुअल रास्ते को यूरोपियन एंटी-फ़ासिस्ट एक्टिविज़्म से इंडियन रेडिकल ह्यूमनिज़्म तक देख कर, यह पेपर उन्हें एम.एन. रॉय की इंटेलेक्चुअल ज़िंदगी में एक सहायक के बजाय, रेडिकल ह्यूमनिज्म के सह-निर्माता और को-आर्किटेक्ट के तौर पर दिखाता है।

यह एलेन को बीसवीं सदी के दमन-विरोधी संघर्षों में एक अहम इंसान के तौर पर दिखाता है, साथ ही उनके विचारों को डेमोक्रेसी, नागरिकता और ह्यूमनिज़्म पर आज की बहसों से जोड़ता है। एलन का जीवन और कार्य, नारीवाद, उपनिवेशवाद-विरोध (anti-colonial struggles) और नागरिकता पर एक अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण से पुनर्विचार करने पर विवश करता है।

Ellen Roy file photograph available with the Indian Renaissance Institute

विश्वव्यापी मूल और राजनीतिक चेतना का निर्माण

> "स्वतंत्रता व्यक्तियों की क्षमताओं के विकास पर लगी सभी पाबंदियों का धीरे-धीरे खत्म होना है।"

एलन के जीवन और उनके योगदान को, बीसवीं सदी में उनके विस्थापन, देशों के बीच आवाजाही और यूरोपीय संकट के वैश्विक अनुभवों के संदर्भ में समझा जा सकता। यह खंड तर्क देता है कि एलन की विश्वव्यापी सोच (cosmopolitanism) एक ऐसी राजनीतिक चेतना थी जो ऐतिहासिक पतन, युद्ध और निर्वासन (Exile) की बुनियाद पर टिकी थी। यह कोई ऐसी विचारधारा नहीं थी जो केवल कल्पना में गढ़ी गई हो।

यूरोप में उनके शुरुआती जीवन ने belonging और नागरिकता के बारे में उनकी समझ को आकार दिया। 1904 में पेरिस में, यूरोपीय राजनीतिक अस्थिरता के दौर में जन्मी एलन, एक सांस्कृतिक रूप से समृद्ध, बहुभाषी माहौल में पली-बढ़ीं। उनके पिता, ऑस्कर, का जन्म 1863 में जर्मनी में हुआ था। बाद में वे अमेरिका चले गए और 1886 में वहाँ के नागरिक बन गए। 1890 में, उन्हें पेरिस में वाणिज्य दूतावास में सेवारत एक राजनयिक प्रतिनिधि के रूप में भेजा गया। उन्होंने 1903 में जर्मनी में जन्मी एडेल फ्रिट्ज़लर से शादी की। एलन उनकी पहली संतान थीं। एलन ने संगीत और गायन का प्रशिक्षण लिया और उन पर विभिन्न राष्ट्रीय और सांस्कृतिक प्रभावों का असर पड़ा।

उनके परिवार की देशों के बीच आवाजाही की यात्रा ने उन्हें belonging से परिचित कराया। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान, 1917 में उनके पिता को जर्मनों ने गिरफ्तार कर लिया, जबकि परिवार को कड़ी निगरानी में पेरिस में ही रहने की अनुमति दी गई। उनकी माँ को रोज़ाना स्थानीय पुलिस थाने में हाजिरी लगानी पड़ती थी। उत्पीड़न के इन अनुभवों ने एलन पर गहरा प्रभाव छोड़ा, जिसने राष्ट्रवाद के बारे में उनकी समझ में एक निर्णायक बदलाव ला दिया। उन्होंने हिंसा, सैन्यवाद और

वैचारिक विभाजन की बदसूरत कार्यप्रणाली को अच्छी तरह समझ लिया था। उनकी विश्वव्यापी सोच, यूरोपीय राष्ट्रवाद और फासीवाद की हिंसा के प्रति एक प्रतिक्रिया थी।

अपनी पीढ़ी के कई युवा यूरोपीय लोगों की तरह, उनका भी aggressive nationalism आक्रामक देशभक्ति और युद्ध के विनाशकारी तर्क से मोहभंग हो गया। यूरोप में बढ़ते फासीवाद ने उनकी राजनीतिक चेतना को और तीव्र कर दिया। उन्होंने संकीर्ण राष्ट्रवादी ढाँचों का विरोध करने के लिए क्रांतिकारी राजनीति को एक विश्वव्यापी संवेदनशीलता के साथ जोड़ा। वे अंतर्राष्ट्रीयवाद, समतावाद और धर्म-निरपेक्षता से प्रभावित थीं। बाद में उन्होंने इस बात पर विचार करते हुए कहा कि उस दौर की क्रूरता ने उन्हें "शत्रुतापूर्ण देशभक्ति की बेतुकी बातों के खिलाफ" खड़े होने के लिए प्रेरित किया।

1920 के दशक के दौरान उनकी राजनीतिक सक्रियता में यही दृष्टिकोण झलकता था। घर पर पैदा हुई कुछ ऐसी असाधारण परिस्थितियों के कारण, 1923 में उन्होंने घर छोड़ दिया। वह 'International League Against Compulsory Motherhood, 'इंटरनेशनल वर्कर्स एड' और इसी तरह के अन्य संगठनों से जुड़ गईं। 1925 में, वह 'कम्युनिस्ट इंटरनेशनल' (कॉमिन्टर्न) द्वारा स्थापित 'किसान इंटरनेशनल' में शामिल हुईं, जहाँ उन्होंने 'यूरोपीय किसान परिषद' की सचिव के रूप में काम किया और उसके बुलेटिन का संपादन किया। 1927 में, वह 'जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी' में शामिल हुईं, जहाँ उन्होंने एक आयोजक और संपादक के रूप में काम किया।

इन गतिविधियों ने उन्हें समाजवादी और साम्राज्यवाद-विरोधी नेटवर्क से जोड़ा और उन्हें अंतरराष्ट्रीय एकजुटता से परिचित कराया। जब यूरोप में राजनीतिक क्षेत्र पूरी तरह से पुरुषों के वर्चस्व वाले थे, तब भी एलेन बौद्धिक रूप से राजनीतिक संगठन, वर्ग-संघर्ष और प्रतिरोध आंदोलनों से जुड़ी रहीं। इन आंदोलनों के भीतर, उन्होंने ऐसा आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित किया, जो कट्टरपंथी विचारधारा को नकारते हुए, तर्कसंगत और नैतिक ज़िम्मेदारी पर ज़ोर देता था। उनके शुरुआती

जीवन के अनुभवों ने राष्ट्रवाद-विरोध, तर्कसंगतता और सार्वभौमिकता पर उनके बाद के विचारों के लिए मज़बूत आधार तैयार किया।

उन्होंने यह जाना कि मानवीय पहचान राष्ट्र या नस्ल की सीमाओं से कहीं आगे है। उन्होंने 'पासपोर्ट-मुक्त विश्व नागरिकता' और 'कागज़-रहित अस्तित्व' की कल्पना की। यह चेतना बाद में उनके 'Radical Humanism' का आधार बनी, जब उन्होंने यह तर्क दिया कि स्वतंत्रता को राष्ट्रीय सीमाओं के भीतर सीमित नहीं किया जा सकता।

इसलिए, यूरोप में उनके शुरुआती अनुभवों ने उनके बाद के बौद्धिक सफ़र को आकार दिया, जब उन्होंने तर्क पर आधारित मानववादी ढाँचा प्रस्तुत किया। इन शुरुआती अनुभवों ने उन्हें एक ऐसा दृष्टिकोण प्रदान किया, जिसके माध्यम से एलेन ने बाद में फ़ासीवाद और राष्ट्रवाद को अलग-थलग समस्याओं के बजाय, वर्चस्व की आपस में जुड़ी हुई संरचनाओं के रूप में समझा।

विश्वनागरिकता: एक जीवंत राजनीतिक अभ्यास

> "मस्तिष्क उत्पादन का एक साधन है, और यह सबसे अधिक क्रांतिकारी वस्तु—विचारों—का उत्पादन करता है।"

एलन के नागरिकता संबंधी विचारों की पुनर्व्याख्या समकालीन नारीवादी सिद्धांतों के माध्यम से की जा सकती है; ये सिद्धांत राष्ट्र-राज्य की कानूनी समझ से आगे बढ़कर नागरिकता को एक जीवंत, बहु-स्तरीय और transnational practice के रूप में देखते हैं।

उनके लिए, नागरिकता की 'वैधता, अवैधता और अर्ध-वैधता' के कटु अनुभवों ने वीज़ा और पासपोर्ट जैसे दस्तावेज़ प्राप्त करने की जटिलता को समझा था। एलन ने लिखा, "राष्ट्रीयता तो वंशानुगत होती है, किंतु राजनयिक पासपोर्ट नहीं।" अपने जीवन पर चिंतन करते हुए एलन ने लिखा था:

> "जब आपका जन्म किसी एक देश में होता है, आपकी माँ किसी दूसरे देश की होती हैं, और आपके पिता किसी तीसरे देश के—और जब आप अपने पिता की नागरिकता के आधार पर—उन सभी देशों में 'विदेशी' कहलाते हैं जहाँ आप पले-बढ़े, जहाँ आपने शिक्षा प्राप्त की, और जहाँ बाद में आप रहे और काम किया—और फिर भी आप उन सभी देशों में 'घर जैसा' ही महसूस करते हैं; और यदि इसके बाद आप किसी ऐसे 'अजनबी' से विवाह कर लेते हैं जो किसी बिल्कुल ही भिन्न महाद्वीप का निवासी हो, और वहाँ भी आप 'घर जैसा' ही महसूस करने लगते हैं—तो निश्चित रूप से यह अनुभव आपको कुछ न कुछ सिखाता ही है। आप सभी देशों और वहाँ के लोगों में अच्छाई और बुराई—दोनों को देख पाते हैं; और आप इस विचार को कदापि स्वीकार नहीं कर पाते कि विभिन्न देशों के बीच के मतभेदों को युद्ध के माध्यम से मिटाया जाना चाहिए।"

यह कथन एलन के 'विश्वनागरिक' (cosmopolitan) दृष्टिकोण के मूल-तत्व को अपने भीतर समेटे हुए है—एक ऐसा दृष्टिकोण जिसके माध्यम से उन्होंने संकीर्ण राष्ट्रवाद की सीमाओं का विस्तार किया और मानवता के लिए एक सार्वभौमिक दृष्टि विकसित की।

जहाँ एक ओर वैश्विक नागरिकता ने एकजुटता के दायरे को बढ़ाया, वहीं इसने विस्थापन और अस्थिरता की भावना भी पैदा की। उन्होंने जीवन के इस विरोधाभास को ईमानदारी से स्वीकार किया:

> "जन्म के संयोग और 'किस्मत' ने मुझे अपने कबीले की सुरक्षा से वंचित कर दिया। पिता की ओर से अमेरिकी, माँ की ओर से जर्मन। जन्म और शुरुआती बचपन से फ्रांसीसी, जर्मनी में शिक्षित, और भारत से विवाहित...। कई महाद्वीपों को अपना घर मानने पर, व्यक्ति किसी एक देश का होकर नहीं रह जाता। दुनिया की नागरिकता का वह उत्साह, जब उदासी के दौर में आता है, तो इंसान को हर जगह अजनबी भी बना सकता है।"

उनके अनुसार, राष्ट्रीय सीमाओं से परे जाने की आज़ादी के साथ-साथ एक ऐसी कमज़ोरी भी जुड़ी होती है कि आप हर जगह के होकर भी कहीं के नहीं रह पाते। वैश्विक नागरिकता में एक दोहरापन शामिल है, जो एक ऐसी दुविधा को दर्शाता है जो मुक्तिदायक भी हो सकती है और व्यक्तिगत अलगाव का कारण भी बन सकती है। उनके लिए, पहचान कोई स्थिर श्रेणी नहीं थी, बल्कि एक ऐसी जीवंत स्थिति थी जिसे ऐतिहासिक ताकतों और व्यक्तिगत अनुभवों ने आकार दिया था।

एलेन के लिए, पहचान को पासपोर्ट या नागरिकता प्रमाण पत्र जैसे दस्तावेज़ों तक सीमित नहीं किया जा सकता था, क्योंकि वे प्रवासन, संघर्ष और ऐतिहासिक संयोगों से आकार पाने वाले मानवीय जीवन की जटिलताओं को पूरी तरह से दर्शाने में असमर्थ थे।

राजनीतिक आंदोलनों को संगठित करने, पत्रिकाओं का संपादन करने और संस्थाओं का निर्माण करने में उनका काम सक्रिय नागरिकता का प्रमाण है; यह नागरिकता

को एक ऐसी रोज़मर्रा की आदत बना देता है जिसकी जड़ें मानववादी विचारधारा में गहरी जमी हैं। इसलिए, एलेन का जीवन और कार्य इन समकालीन ढाँचों को एक विशिष्ट दिशा में आगे बढ़ाते हैं। एलेन का radical दृष्टिकोण हैं जिसमें नागरिकता एक व्यापक मुक्ति-परियोजना हो जाती है जिसमें सत्ता-संरचनाओं को बदलना, असमानता को दूर करना शामिल है।

उनकी सोच शरणार्थियों, प्रवासियों और आप्रवासियों से जुड़ी समकालीन बहसों को समझने के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि उन्होंने नागरिकता और जुड़ाव की समझ का विस्तार किया। एक वैश्विक नागरिक के बारे में उनके दृष्टिकोण के अनुसार, जुड़ाव की परिभाषा एक बेहतर भविष्य के निर्माण की साझा ज़िम्मेदारी से तय होती है। आज के संदर्भ में, जब प्रवास और राज्यविहीनता जैसे मुद्दों का राजनीतिक हथियार के तौर पर इस्तेमाल किया जा रहा है, तब वास्तविक जीवन की स्थितियों में निहित जटिलताओं और बारीकियों को समझने के लिए उनके कार्य का पुनरावलोकन आवश्यक है।

एलन रॉय एक विश्ववादी नारीवादी

> "भौतिक प्रकृति की पृष्ठभूमि से उभरते हुए मनुष्य मूल रूप से एक तर्कशील प्राणी है।"

एलन का जीवन और कार्य, नारीवाद की उस पारंपरिक रूपरेखा से परे जाकर उस पर पुनर्विचार करने जैसा था, जो इसे केवल राष्ट्रवादी संघर्षों के दायरे में सीमित रखती थी। उनका विश्ववादी नारीवाद (cosmopolitan feminism) तर्कवाद (reason) और अंतर्राष्ट्रीयतावाद (internationalism) पर आधारित था। यह नारीवाद यूरोप और भारत में उनके अनुभवों से प्रेरित था।

इससे पहले, उन्होंने यूरोप में फासीवाद-विरोधी संघर्ष में भाग लिया था, और दशकों तक भारत में स्थानीय समुदायों के साथ काम किया; इस दौरान उन्होंने mystic विचारों को नकारते हुए तर्क और विवेक को प्राथमिकता दी। उनके नारीवाद ने राष्ट्र, संस्कृति और लिंग की सीमाओं को चुनौती दी, और महिलाओं की मुक्ति को एक व्यापक लोकतांत्रिक संघर्ष के दायरे में स्थापित किया। उनके लिए, व्यक्तिगत स्वायत्तता, बौद्धिक समानता और आलोचनात्मक विवेक सर्वोपरि थे।

हालाँकि एलन ने स्वयं को कभी एक 'नारीवादी' के रूप में परिभाषित नहीं किया, फिर भी उनका जीवन और कार्य नारीवाद का एक जीवंत और व्यावहारिक उदाहरण था। एक संपादक, आयोजक और कार्यकर्ता के रूप में, उन्होंने उन सार्वजनिक क्षेत्रों में उपस्थिति दर्ज कराई, जिन पर ऐतिहासिक रूप से पुरुषों का वर्चस्व रहा था।

एलन ने वैचारिक राष्ट्रवाद की आलोचना की, और यह चेतावनी दी कि राष्ट्र को व्यक्ति से ऊपर रखने की प्रवृत्ति ऐसी संरचनाओं को पुनर्जीवित करती है, जो महिलाओं को हाशिए पर धकेल देती हैं। उनका विश्ववादी नारीवाद Radical Humanism के मुक्तिवादी दृष्टिकोण के साथ पूर्णतः मेल खाता था। यह तर्कसंगत

दृष्टिकोण उनके नारीवाद को उन 'पहचान-आधारित' ढाँचों से अलग करता है, जो लिंग-संबंधी और अपरिवर्तनीय श्रेणियों पर निर्भर रहते हैं।

वि-उपनिवेशीकरण (decolonization) और बहुसंस्कृतिवाद (multiculturalism) पर चल रही समकालीन बहसों के संदर्भ में, एलन का नारीवाद एक विकल्प प्रस्तुत करता है। उनका अंतर्राष्ट्रीयतावादी दृष्टिकोण 'पूर्व-पश्चिम' के binaries को चुनौती देता है। उन्होंने औपनिवेशिक रूढ़ियों को, और आदर्श स्त्रीत्व की राष्ट्रवादी निर्मितियों को सिरे से खारिज कर दिया। इसके बजाय, उन्होंने तर्क और नैतिकता पर आधारित मानवीय क्षमताओं पर ज़ोर दिया।

राष्ट्र, संस्कृति और घरेलू सुधार से परे नारीवाद

> "ज्ञान अस्तित्व की जागरूकता है... सत्य ही ज्ञान का सार है। और जो स्वतंत्रता यह ज्ञान मनुष्य को प्रदान करता है, वह है अपनी रचनात्मक भूमिका को निभाने की स्वतंत्रता; अपनी दुनिया को अपने उद्देश्य के अनुसार ढालने की स्वतंत्रता; और अपने भीतर—चाहे सचेत रूप से या अचेत रूप से—मौजूद हर चीज़ को विकसित करने की स्वतंत्रता।"

अपनी पुस्तक The White Woman's Other Burden में, कुमारी जयवर्धने ने औपनिवेशिक दक्षिण एशिया में विदेशी महिलाओं के जीवन का अन्वेषण किया, और उन्हें रूढ़िवादी "राज की महिलाओं" (Women of the Raj) से अलग करके दिखाया। तब कई विदेशी महिलाओं ने सांस्कृतिक और राजनीतिक सीमाओं को पार किया, साम्राज्यवाद का विरोध किया, और राष्ट्रवादी, समाजवादी, सुधारवादी, नारीवादी आंदोलनों तथा औपनिवेशिक-विरोधी संघर्षों में हिस्सा लिया।

अंतर-राष्ट्रीय महिला बुद्धिजीवियों और कार्यकर्ताओं के इसी व्यापक ऐतिहासिक संदर्भ में, एलेन रॉय के जीवन और कार्य को एक ऐसे रूप में देखा जा सकता है, जो लैंगिक न्याय को मुक्ति के साथ जोड़ता है। एलेन ने स्वतंत्रता, न्याय और मानवीय समाज की तलाश में भौगोलिक, सांस्कृतिक और वैचारिक सीमाओं को पार किया। फिर भी, इतिहास ने उनकी असाधारण यात्रा को धुंधला कर दिया है।

एलेन ने यह तर्क दिया कि महिलाओं की स्थिति समाज की समग्र संरचना से जुड़ी हुई है। यह दृष्टिकोण अस्वीकार करता रहा कि महिलाओं की मुक्ति को एक अलग-थलग क्षेत्र के रूप में देखा जाए। उनके अनुसार, सत्ता-संरचनाओं (power structures) में बदलाव किए बिना लैंगिक समानता प्राप्त नहीं की जा सकती। यह पक्ष उनके Radical Humanism को दर्शाता है कि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्थाएँ मिलकर ही व्यक्ति की स्वतंत्रता निर्धारित करती हैं।

उन्होंने माना कि महिलाओं को सार्वजनिक और राजनीतिक जीवन में पुरुषों के समान ही भागीदारी करनी चाहिए; यह दृष्टिकोण महिलाओं को केवल घरेलू भूमिकाओं तक सीमित रखने की प्रवृत्ति को सिरे से खारिज करता है। एलेन ने लिखा: "समाज में महिलाओं का स्थान, समग्र रूप से समाज की व्यवस्था के साथ अत्यंत गहराई से जुड़ा हुआ है।" उनका नज़रिया औपनिवेशिक भारत के महिला आंदोलन colonial Indian women's movement से मेल खाता है। उन्होंने तर्क दिया कि महिलाओं की मुक्ति को एक अलग एजेंडा नहीं माना जा सकता, बल्कि इसे बड़े राजनीतिक संघर्षों से जोड़ा जाना चाहिए। उन्होंने आगे समझाया,

> "वे प्रबुद्ध महिलाएं जो समाज में अपनी स्थिति बदलना चाहती हैं, उन्हें पूरे समाज को बदलने के लिए चल रहे आम आंदोलन में अपनी जगह बनानी चाहिए—इस तरह से कि महिलाओं को भी अधिकारों, अवसरों, जिम्मेदारियों और दर्जे के मामले में प्रभावी समानता मिल सके। फ्रांसीसी क्रांति के आदर्श अभी भी दुनिया के एक बड़े हिस्से में हासिल नहीं हो पाए हैं। महिलाओं को आज़ादी, समानता और किसी भी अन्य इंसान के बराबर का दर्जा तभी मिलेगा, जब पूरी मानवता इन आदर्शों को हासिल कर लेगी।"

यहाँ, एलेन महिलाओं की मुक्ति को आज़ादी और समानता से जोड़ती हैं। उनका नारीवाद, लोकतांत्रिक और क्रांतिकारी बदलाव के एक बड़े दृष्टिकोण में निहित था। उन्होंने महिलाओं को सार्वजनिक और राजनीतिक जीवन में समान रूप से और सक्रियता से हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहित किया:

> "... यह ठान लें कि पूरे समाज की प्रगति के लिए काम करना ही सबसे ज़रूरी काम है—खासकर आपके अपने बच्चों के हित में, जिनके लिए आप आज की दुनिया से कहीं बेहतर दुनिया बनाना चाहती हैं। अगर आप इस विश्वास के साथ सार्वजनिक जीवन में कदम रखती हैं, तो एक 'महिला' के तौर पर नहीं, बल्कि समाज के एक सदस्य के तौर पर ऐसा करें। फिर उद्देश्यपूर्ण और पूरे उत्साह के साथ काम करें; आज हमारी आँखों के सामने जो इतिहास बन रहा है, उसके हाशिये पर खड़े होकर सिर्फ़ मूक दर्शक न

बनें। अगर आप अपनी सोच के अनुरूप काम करती हैं... तो एक ऐतिहासिक रूप से ज़रूरी क्रांतिकारी आंदोलन की सफलता निश्चित है—खासकर तब, जब समाज की आधी आबादी (महिलाएं) हों।"

यह बयान नागरिकता के प्रति उनकी व्यापक सोच को दर्शाता है जो समावेशी और सहभागी है। एलेन की नज़र में, राजनीतिक भागीदारी एक साझा मानवीय ज़िम्मेदारी है। उनका मानना था कि किसी भी क्रांतिकारी आंदोलन की सफलता के लिए सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की भागीदारी अत्यंत आवश्यक है। आज के नारीवादी विमर्शों में—जो intersectionality (विभिन्न पहचानों के आपसी जुड़ाव) और वैश्विक असमानता जैसे मुद्दों पर केंद्रित हैं—उनका यह दृष्टिकोण प्रासंगिक है। यह हमें यह समझने में मदद करता है कि लैंगिक न्याय को लोकतंत्र, राजनीतिक अर्थव्यवस्था और सामाजिक-सांस्कृतिक बदलाव जैसे व्यापक सवालों से अलग करके नहीं देखा जा सकता।

Ellen Roy with M.N. Roy file photo with Indian Renaissance Institute.

एंटी-फ़ासिज़्म और क्रांतिकारी पॉलिटिक्स

> "इंसानी कोशिशों का मकसद, चाहे वो अकेले हों या मिलकर, लगातार बढ़ती आज़ादी पाना है।"

एलन रॉय की सोच पर बीसवीं सदी में यूरोपियन फ़ासीवाद का बहुत असर पड़ा था। नाज़ी जर्मनी में ज़ुल्म और ज़बरदस्ती के अनुभवों ने उन्हें नागरिकता की कमज़ोरी का एहसास कराया, जिससे उन्हें नेशनलिस्ट सिस्टम की समस्याओं पर फिर से सोचने पर मजबूर होना पड़ा। उन खराब हालात ने उन्हें कम्युनिस्ट पॉलिटिक्स और एंटी-फ़ासीवाद एक्टिविज़्म की ओर खींचा। उन्होंने नेशनलिज़्म, अथॉरिटेरियनिज़्म और फ़ासीवाद की कमियाँ देखीं। ये विचार बाद में रेडिकल ह्यूमनिज़्म के उनके विज़न में दिखे।

जैसे-जैसे नाज़ी असर बढ़ा, उन्हें फ्रांस जाने पर मजबूर होना पड़ा। पेरिस में, वह मुश्किल हालात में रहीं, सेक्रेटरी के काम से अपना गुज़ारा करती रहीं और साथ ही एंटी-फ़ासीवाद एक्टिविज़्म में भी शामिल रहीं। देश निकाला के अनुभवों ने डेमोक्रेसी, इंटरनेशनलिज़्म और अथॉरिटेरियनिज़्म के ख़िलाफ़ लड़ाई के प्रति उनके कमिटमेंट को मज़बूत किया। यूरोप में फासीवाद का विरोध करने वाले नेटवर्क के साथ उनके जुड़ाव ने उनके एंटी-फासीस्ट रुख को मज़बूत किया। 1935 में, उन्होंने पेरिस इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस को ऑर्गनाइज़ करने में मदद की, जिसमें फासीवाद और युद्ध के खिलाफ लेखकों, कलाकारों और एक्टिविस्ट को एक साथ लाया गया। इस अनुभव ने दिखाया कि फासीवाद को खत्म करने के लिए हथियारों के अलावा लगातार intellectual practice बौद्धिक अभ्यास की भी ज़रूरत है।

राजनीति में इन लगातार जुड़ावों ने totalitarianism और लोगों पर इसके असर के बारे में उनकी समझ को बनाया। उन्होंने तर्क दिया, टोटलिटेरियन सिस्टम के तहत, पॉलिटिकल पावर समाज की सेवा करना बंद कर देती है और पूरी तरह से कंट्रोल का एक ज़रिया बन जाती है। एलेन ने तर्क दिया कि किसी भी पॉलिटिकल

ऑर्डर की वैधता इस बात पर निर्भर करती है कि वह अपने नागरिकों की भलाई सुनिश्चित करने की काबिलियत रखता है। उन्होंने कहा कि नैतिक ज़िम्मेदारी के बिना पावर तबाही की वजह बन सकती है। फ़ासिज़्म देश के प्रति वफ़ादारी के लिए मजबूर करके डेमोक्रेटिक सिद्धांतों को उलट देता है।

एलेन के हिसाब से, फ़ासिज़्म एक ऐसा सिस्टम था जो गैर-बराबरी, डर और तानाशाही में जड़ जमाए हुए था। फ़ासिज़्म ने भ्रष्टाचार, हिंसा और प्रोपेगैंडा को मिला दिया, जहाँ पावर अपने आप में एक मकसद बन जाती है। जर्मनी के हालात पर कमेंट करते हुए, एलेन ने लिखा,

> "हिटलर की ताकत उसकी ब्लैकमेलर के तौर पर बेशर्मी से धोखा देने की देने की कला है। ..... जो कोई भी जर्मनी और जर्मनों को जानता है, वह जानता है कि हिटलरवाद उन्हें अपनी सामाजिक और आर्थिक कमियों को और ज़्यादा बड़े बदलावों के लिए एकमात्र विकल्प के तौर पर मंज़ूर था; निराशा में, उन्होंने हिटलर की शेखी बघारने वाली बातों पर यकीन कर लिया, जिसमें उसने उनकी सभी समस्याओं के हल तक ले जाने का वादा किया था। वह फेल हो गया। जर्मनी की अंदरूनी समस्याओं को हल करने में नाकाम रहने पर, वह लोगों का ध्यान बुनियादी मुद्दों से हटाकर, बाहरी दिखावे की तरफ मोड़ने की कोशिश करता है।"

एलेन के लिए, फासीवाद को हराने के लिए उन हालात को खत्म करना ज़रूरी था जिनसे तानाशाही सोच पैदा हुई थी। उनके अनुसार, फासीवाद के खिलाफ लड़ाई के लिए उन सामाजिक-आर्थिक हालातों को बदलने की ज़रूरत थी जिनसे तानाशाही को फलने-फूलने में मदद मिली। इसी समझ ने बाद में उनके इस आग्रह को आकार दिया कि डेमोक्रेसी को न केवल पावर बांटनी चाहिए, बल्कि उन सामाजिक और नैतिक हालातों को भी बदलना चाहिए जिनके तहत पावर का इस्तेमाल किया जाता है। एलेन ने कल्चर, शिक्षा, और पॉलिटिकल ऑर्गनाइज़ेशन को डेमोक्रेसी को बनाए रखने के लिए ज़रूरी कदम माना।

उन्होंने फासीवाद और साम्राज्यवाद के खतरों के बीच कनेक्शन देखा और कहा कि दोनों को ही इंसानियत को गुलाम बनाने और उसका शोषण करने का एक जैसा अधिकार है। उन्होंने लिखा, "साम्राज्यवाद ने फासीवाद को जन्म दिया है, जो साम्राज्यवाद का एक एडवांस्ड रूप है..."

दूसरे विश्व युद्ध के दौरान, एलेन ने कहा कि फ़ासीवाद के ख़िलाफ़ संघर्ष में न्याय और भौतिक खुशहाली के मुद्दों को भी शामिल किया जाना चाहिए। भारतीय संदर्भ में उन्होंने यह तर्क दिया कि आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित किए बिना आज़ादी बेमानी है। लोकतंत्र को भूख, गरीबी और असमानता जैसी स्थितियों का समाधान करना चाहिए। उन्होंने कहा:

> "अगर फ़ासीवाद के ख़िलाफ़ लड़ाई आज़ादी और प्रगति के लिए है, तो इस प्रगति को एक ठोस रूप दिया जाना चाहिए। आज़ादी का मतलब है अभाव से मुक्ति, और प्रगति का अर्थ है इंसानों को उस पशुवत अवस्था से ऊपर उठाना—जहाँ सारी गतिविधियाँ केवल शारीरिक अस्तित्व को बनाए रखने के लिए होती हैं—और उन्हें गरिमापूर्ण अवस्था तक ले जाना; ऐसी अवस्था जहाँ हर इंसान ऊँचे विचारों के बारे में सोच सके और श्रेष्ठ आदर्शों का अनुसरण कर सके। और यह काम भूखे पेट नहीं किया जा सकता।"

इस प्रकार, एलेन का फ़ासीवाद विरोध केवल किसी विशिष्ट शासन की आलोचना तक सीमित न रहकर, सत्तावाद की ही आलोचना करता था। उनका फ़ासीवाद-विरोधी दृष्टिकोण एक ऐसा बौद्धिक सेतु था, जिसने यूरोपीय क्रांतिकारी राजनीति को मानव मुक्ति के एक सार्वभौमिक सिद्धांत से जोड़ा। तर्कसंगतता, आज़ादी और नैतिक ज़िम्मेदारी पर एलेन का ज़ोर, सत्तावाद का विरोध करने के लिए एक वैकल्पिक ढाँचा प्रस्तुत करता है।

शांति: सामाजिक और राजनीतिक पुनर्निर्माण

> "विचारों की गतिशीलता सामाजिक विकास की प्रक्रिया के समानांतर चलती है; ये दोनों एक-दूसरे को परस्पर प्रभावित करते हैं।"

फासीवाद-विरोधी आलोचना से आगे बढ़ते हुए, एलेन ने शांति और युद्ध-पश्चात पुनर्निर्माण की बात की। उनके लिए, शांति समाज के पुनर्निर्माण की एक सक्रिय प्रक्रिया थी, जो न्याय, सहयोग और गरिमा पर आधारित थी। बीसवीं सदी के वैश्विक युद्धों और तनावों के संदर्भ में, उन्होंने तर्क दिया कि शांति केवल सैन्य गठबंधनों, कूटनीतिक समझौतों या राजनीतिक स्वतंत्रता के माध्यम से सुनिश्चित नहीं की जा सकती। उन्होंने बढ़ते अंतरराष्ट्रीय तनावों, अनिश्चितता, भय और भविष्य के युद्धों की आशंकाओं से निपटने के लिए रचनात्मक कार्यों को प्राथमिकता दी।

इस दृष्टिकोण से, संधियों के माध्यम से या रक्षा के लिए हथियारों का जखीरा जमा करके शांति प्राप्त नहीं की जा सकती। उनका शांति सिद्धांत उनकी "मानसिक क्रांति" की अवधारणा से जुड़ा है, जिसमें व्यक्ति दूसरों को शत्रु के बजाय एक साझा मानवता के सदस्य के रूप में देखते हैं। एलेन का मानना था कि स्थायी शांति के लिए लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा करना, न्याय को बनाए रखना और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना आवश्यक है। अपने समय के वैश्विक संकटों पर चिंतन करते हुए, एलेन ने लिखा:

> "विश्व शांति उन सिद्धांतों की विजय पर निर्भर करती है, जिनकी रक्षा उन सीमाओं के भीतर की जाती है... यह क्षीण होते पुराने विश्व की, उभरते हुए नए विश्व के समक्ष एक चुनौती होगी।"

यह कथन उनके इस दृढ़ विश्वास को प्रकट करता है कि शांति का भविष्य, समाज के सत्तावादी और लोकतांत्रिक दृष्टिकोणों के बीच होने वाले संघर्ष पर निर्भर था।

एक ऐसे "नए विश्व" का निर्माण करने के लिए–जो स्वतंत्रता, गरिमा और लोकतांत्रिक पुनर्निर्माण का प्रतीक हो–उस पुराने विश्व का विध्वंस आवश्यक है, जिसका प्रतिनिधित्व सैन्यवाद, साम्राज्यवाद, आक्रामक राष्ट्रवाद और आर्थिक शोषण करते हैं। एलेन ने स्पष्ट किया कि शांति की स्थापना एक ऐसी वैश्विक व्यवस्था के निर्माण पर निर्भर है, जो साझा मानवीय हितों पर आधारित हो।

अंतरराष्ट्रीय सहयोग की गतिविधियों में, केवल Elite वर्ग की कूटनीति पर निर्भर रहने के बजाय, आम लोगों को भी शांति-निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल किया जाना चाहिए। उनके लिए, शांति को बनाए रखने हेतु 'जन-संपर्क' (people-to-people contact) महत्वपूर्ण था; एक ऐसा माध्यम, जहाँ आपसी समझ और संस्कृति की सार्वभौमिकता की पहचान, युद्ध के विरुद्ध एक सुरक्षा कवच का कार्य कर सके। अतः, शांति-निर्माण की यह अवधारणा ऐसी लोकतांत्रिक प्रक्रिया थी, जिसकी जड़ें विभिन्न समाजों के बीच संवाद और आपसी सम्मान में निहित थीं। उन्होंने सुझाव दिया कि संयुक्त राष्ट्र लोगों को एक साथ लाकर, शत्रु देशों के बीच की गलतफहमियों को दूर करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। ये आपसी मेल-जोल युद्ध की मनोवैज्ञानिक और वैचारिक नींव को खत्म कर सकते हैं। सीधे संवाद को बढ़ावा देने से उन्हें यह समझने में मदद मिल सकती है कि भाषा, रीति-रिवाजों और परंपराओं में अंतर होने के बावजूद, हर जगह के लोगों की आकांक्षाएँ, भावनाएँ और आशाएँ एक जैसी ही होती हैं। इस तरह के जुड़ाव उनकी सोच और चेतना को बदल सकते हैं। यह विचार उनके विश्व-बंधुत्व वाले मानववाद के विचारों को दर्शाता था।

एलेन ने यह तर्क दिया कि शांति स्थापित करने के प्रयासों के लिए सामाजिक-आर्थिक पुनर्निर्माण महत्वपूर्ण है। युद्ध अभाव, असमानता और प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देता है। इसलिए, भौतिक परिस्थितियों में बदलाव लाकर इस समस्या का समाधान किया जा सकता है। स्थिर और स्थायी शांति के लिए गरीबी कम करना, शिक्षा का विस्तार करना और सहयोगात्मक ढाँचे तैयार करना आवश्यक है। मुनाफ़े के बजाय सामूहिक कल्याण को प्राथमिकता देना महत्वपूर्ण है। उनका मानना था

कि प्रगति का अर्थ है सैन्यवाद का सक्रिय रूप से विरोध करना और रचनात्मक विकास को प्राथमिकता देना। उन्होंने लिखा:

> "भारतीय स्वतंत्रता को हम जो सबसे बड़ा महत्व दे सकते हैं, वह यह होगा कि हम अपने सभी संसाधनों के साथ शांति के निर्माण में जुटे रहें—मानो कोई युद्ध का खतरा ही न हो। यदि दूसरे लोग भी ऐसा ही करें, तो हो सकता है कि अंततः युद्ध हो ही न। और यदि युद्ध हो भी जाए, तो भी एक नींव रखी जा चुकी होगी; कुछ ऐसा अच्छा निर्मित हो चुका होगा जो अपने आप में सार्थक था और जो उस महाविनाश के बाद भी बचा रह सकता है। क्योंकि सभी बड़े विनाशों के बाद भी कुछ न कुछ बचा रह जाता है—विचार, आदर्श और महान मानवीय प्रयासों की स्मृतियाँ।"

यह मानववादी दृष्टिकोण विनाश के बीच सामूहिक प्रयासों के बारे में उनके विचारों को दर्शाता था। एलेन के लिए, युद्ध के बाद के पुनर्निर्माण का अर्थ है लोकतांत्रिक मूल्यों, तार्किक सोच और एकजुटता को बढ़ावा देना। इस प्रकार, शांति और पुनर्निर्माण का उनका सिद्धांत लोकतंत्रीकरण, आर्थिक न्याय और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को आपस में जोड़ता है। ये सभी तत्व मिलकर शांति की एक व्यापक परिकल्पना का निर्माण करते हैं।

एलेन का डेमोक्रेटिक रिकॉन्स्ट्रक्शन का प्रोजेक्ट, फेमिनिस्ट और मानव-केंद्रित नज़रिए से आज की ग्लोबल पॉलिटिक्स पर विचार का एक ज़रिया है। शांति पर उनके विचार मिलिट्री और स्टेट-सेंट्रिक नज़रिए के बजाय सिक्योरिटी, एकजुटता और ग्लोबल सहयोग पर ज़ोर देते हैं। आज की फेमिनिस्ट फॉरेन पॉलिसी के फ्रेमवर्क उनके रेडिकल ह्यूमनिस्ट विज़न से पूरी तरह मेल खाते हैं, जो शांति को पावर पॉलिटिक्स के बजाय तर्क विवेक, सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी और वैश्विक एकजुटता से जोड़ते हैं।

पार्लियामेंट्री फॉर्म की क्रिटिक के तौर पर रेडिकल डेमोक्रेसी

> "सभी रैशनल इंसानी कोशिशों का मकसद, चाहे वो पर्सनल हो या कलेक्टिव, लगातार बढ़ती आज़ादी पाना है। आज़ादी का मतलब है, इंसानों के तौर पर लोगों की काबिलियत पर लगी सभी पाबंदियों का धीरे-धीरे खत्म होना। किसी भी कलेक्टिव कोशिश की सफलता को उसके हिस्सेदार यूनिट्स के असल फायदे से मापा जाना चाहिए।"

एलेन ने पार्लियामेंट्री डेमोक्रेसी को काफ़ी नहीं माना क्योंकि यह फॉर्मलिज़्म पर ज़ोर देती है। उन्होंने रेडिकल डेमोक्रेसी को तर्क, भागीदारी और बराबरी पर आधारित कलेक्टिव सेल्फ-ट्रांसफॉर्मेशन का सिस्टम बताया। जबकि पार्लियामेंट्री डेमोक्रेसी "लोगों" को रिप्रेजेंट करने का दावा करती है, यह पॉलिटिकल भागीदारी को वोटिंग तक सीमित देती है, जिससे निहित स्वार्थों को बढ़ावा मिलता है। इस सिस्टम में, पावर रिप्रेजेंटेटिव द्वारा डेलीगेट और कंट्रोल की जाती है। उन्होंने पार्लियामेंट्री डेमोक्रेसी को लोगों के शासन के बजाय एक भ्रम या 'दिखावा' बताया क्योंकि सत्ता में बैठे लोग रोज़मर्रा की असलियतों से बेपरवाह रहे।

इसके उलट, रेडिकल डेमोक्रेसी के उनके विचार ने पॉलिटिकल पावर पर ज़ोर दिया जो नागरिकों की अपनी सामाजिक और आर्थिक स्थितियां बेहतर बनाने में भागीदारी पर आधारित हो। उनके विचार में, डेमोक्रेसी सिर्फ़ सरकारें चुनने का एक तरीका नहीं है, बल्कि पूर्ण सशक्तिकरण की प्रक्रिया है जिसके ज़रिए लोग समझदारी से शासन चलाने की क्षमता का विकास करते हैं। उनका मानना था कि पढ़े-लिखे, जागरूक और समझदार लोगों को शासन की प्रक्रिया में हिस्सा लेना चाहिए। डेमोक्रेसी को सिर्फ़ वोटिंग तक सीमित नहीं किया जा सकता। इसे ऐसे हालात बनाने होंगे जिनमें हर इंसान सम्मान से जी सके और ज़िंदा रहने की लड़ाई से आगे बढ़कर ऊँचे सपने देख सके। उन्होंने लिखा:

> "डेमोक्रेसी लोगों को राज करने की ताकत देती है। ताकत अपने आप में सिर्फ़ उन लोगों को लुभाती है जो बहुत ज़्यादा महत्वाकांक्षी हैं - जो सबसे बुरे पुराने तानाशाहों का प्रोटोटाइप हैं। ताकत का लालच होता है। लेकिन असली मकसद है लोगों को फ़ायदा पहुँचाना और उनकी स्पिरिचुअल spiritual और मैटेरियल भलाई को बढ़ावा देना। इसके लिए, यह ज़रूरी है कि लोग तरक्की और भलाई की शर्तें बनाने के लिए जागरूक और पढ़े-लिखे हों; और दूसरा, उनके लिए ताकत का असरदार तरीके से इस्तेमाल करने के तरीके बनाए जाएँ।"

एलन ने ताकत का मतलब यह बताया कि यह दूसरों पर दबदबा बनाने के बजाय ज़िंदगी की क्वालिटी बेहतर बनाने की इंसानी काबिलियत है। इस फ्रेमवर्क में, डेमोक्रेसी पावर और कंट्रोल के लिए मुकाबले के बजाय इंसानी रचनात्मकता का एक्सप्रेशन बन जाती है। उनका मानना था कि सच्चे लोगों के राज के लिए समाज के इंटेलेक्चुअल, मटीरियल और नैतिक लेवल को ऊपर उठाना ज़रूरी है। उनकी रेडिकल डेमोक्रेसी में ऐसे समझदार और ज़िम्मेदार नागरिकों को बढ़ावा देना था जो मिलकर तरक्की को आकार दे।

उन्होंने लोकतांत्रिक पुनर्निर्माण के लिए आपसी सहयोग की वकालत की। एलेन के लिए, सहयोग एक डेमोक्रेटिक एथिक था जो जाति, धर्म, क्षेत्र और क्लास के बंटवारे को दूर कर सकता था। उन्होंने बराबर हिस्सेदारी, शेयर्ड ओनरशिप, कलेक्टिव ज़िम्मेदारी और आपसी मदद पर आधारित कोऑपरेटिव डेमोक्रेटिक एसोसिएशन को बढ़ावा दिया। इसलिए, आपसी सहयोग एजुकेशनल स्पेस हैं जहाँ लोकतांत्रिक मूल्यों और विश्वासों को मज़बूत किया जाता है।

महत्वपूर्ण है कि एलेन ने 'रेडिकल डेमोक्रेसी' को आर्थिक बदलाव से जोड़ा। उनके विचार में, अभाव आज़ादी को कमज़ोर करता है, क्योंकि यह व्यक्तियों की सार्वजनिक जीवन में सार्थक रूप से हिस्सा लेने की क्षमता को सीमित कर देता है। इसलिए, असमानता को कम करने और सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए लोकतंत्र में आर्थिक पुनर्गठन शामिल होना चाहिए।

उनकी 'रेडिकल डेमोक्रेसी' विकेंद्रीकरण पर ज़ोर देती है। उन्होंने सहकारी समितियों, मज़दूर संगठनों और सामुदायिक संस्थाओं जैसी स्थानीय संरचनाओं के लोकतंत्रीकरण की वकालत की। ये संस्थाएँ नागरिकों को उन फ़ैसले लेने की प्रक्रियाओं में सीधे तौर पर हिस्सा लेने में सक्षम बनाती हैं, जो उनके रोज़मर्रा के जीवन पर असर डालती हैं। ये राजनीतिक सत्ता और सामाजिक वास्तविकता के बीच की खाई को पाटती हैं।

संक्षेप में, एलेन की 'रेडिकल डेमोक्रेसी' औपचारिक राजनीति से हटकर एक ठोस लोकतंत्र की ओर बदलाव को दर्शाती है, जहाँ आज़ादी को किसी व्यक्ति की शासन-प्रशासन में हिस्सा लेने की क्षमता से मापा जाता है। यह अवधारणा उनके 'रेडिकल ह्यूमनिस्ट' नव मानववाद प्रोजेक्ट की नींव रखती है, जिसमें लोकतंत्र को तर्कवाद, नैतिक ज़िम्मेदारी और आज़ादी से अलग नहीं किया जा सकता। इस दृष्टिकोण में, 'रेडिकल डेमोक्रेसी' एक सामूहिक जीवन-शैली है, जो भागीदारी, शिक्षा और सहयोग पर आधारित है।

आज के दौर में, जब लोकतांत्रिक मूल्यों में गिरावट आ रही है, राजनीतिक ध्रुवीकरण बढ़ रहा है और संस्थाओं पर जनता का भरोसा कम हो रहा है, उनका यह दृष्टिकोण लोकतंत्र को केवल एक चुनावी प्रणाली से कहीं आगे बढ़कर, एक सक्रिय और भागीदारीपूर्ण नैतिक अभ्यास के रूप में आज भी प्रासंगिक है।

लोक-सरकार: लोकतांत्रिक बदलाव की एक रणनीति

> "नैतिकता अंतरात्मा की पुकार है, और अंतरात्मा अपने परिवेश के प्रति सहज जागरूकता और प्रतिक्रिया है।"

एलन रॉय का राजनीतिक दृष्टिकोण संसदीय लोकतंत्र की सैद्धांतिक आलोचनाओं से आगे बढ़कर राजनीतिक पुनर्निर्माण के एक ठोस कार्यक्रम की ओर बढ़ता है। उनकी "लोक-सरकार" (People's Government) की अवधारणा लोकतंत्र को, Elite वर्ग के नियंत्रण वाली प्रतिनिधित्व प्रणाली से बदलकर, शिक्षा, सहयोग और दैनिक भागीदारी पर आधारित एक जन-संगठन में बदलने की रणनीति प्रस्तुत करती है।

एलन ने "राष्ट्रीय सरकार" की प्रचलित राष्ट्रवादी अवधारणा को अस्वीकार कर दिया, जिसमें राजनीतिक सत्ता औपनिवेशिक शासकों से हटकर स्थानीय elite के हाथों में चली जाती है, लेकिन सत्ता की संरचना में कोई बदलाव नहीं होता। उन्होंने ऐसे सत्ता-हस्तांतरणों को अपर्याप्त माना, क्योंकि वे मौजूदा ऊँच-नीच को बनाए रखते हैं। उन्होंने आगाह किया कि प्रतिक्रियावादी ताकतें राष्ट्रवाद की भाषा का इस्तेमाल करके आलोचनाओं को दबाती हैं और ढांचागत बदलावों को रोकती हैं।

उन्होंने कहा कि वास्तविक राजनीतिक बदलाव के लिए आम लोगों का सक्रिय रूप से संगठित होना ज़रूरी है, ताकि वे शासन-प्रक्रिया के मुख्य कर्ता बन सकें। उन्होंने ऐसे शासन की वकालत की, जिसमें राजनीतिक सत्ता लोगों के प्रति जवाबदेह हो। उनकी 'लोक-सरकार' की अवधारणा इस विश्वास पर आधारित है कि लोकतंत्र का निर्माण ऊपर से थोपने के बजाय, जन-स्तर से किया जाना चाहिए। अतः, 'लोक-सरकार' संगठित नागरिकता का एक आंदोलन है। उन्होंने शासन-प्रक्रिया को उत्तरदायित्व, भागीदारी और नैतिक नागरिकता के साथ जोड़ा।

एलन की 'लोक-सरकार' की अवधारणा में, मानव-मात्र की उस क्षमता में उनका गहरा विश्वास था कि वे सामूहिक कल्याण के लिए तर्कसंगत और सहयोगात्मक ढंग से संगठित हो सकते हैं। उनका मानना था कि लोकतंत्र केवल चुनावी प्रतिनिधित्व तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि यह एक जीवंत आचरण बनना चाहिए जो हमारे दैनिक जीवन-व्यवहार में रच-बस जाए। उनके लिए, सच्चे लोकतंत्र का अर्थ था—मज़दूरों, किसानों और हाशिए पर समुदायों को सशक्त बनाना। इस दृष्टिकोण को रेखांकित करते हुए उन्होंने लिखा:

> "हमने क्रांति के नए तरीकों की आवश्यकता को स्वीकार कर लिया है।... हमारी कार्य-योजना यह है: 'लोक-सम्मेलनों' (People's Conventions) के माध्यम से, तथा प्रतिदिन चलने वाले—सतत, गहन और व्यापक—प्रचार-अभियानों के द्वारा मतदाताओं को शिक्षित करना।"

ट्रेड यूनियनों, सहकारी समितियों, गाँव की समितियों और स्थानीय संगठनों पर उनका ज़ोर, विकेंद्रीकरण और सहभागी लोकतंत्र के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उन्होंने लोकतांत्रिक संघों के ऐसे नेटवर्क की कल्पना की, जिसके माध्यम से आम लोग शासन-प्रशासन में भाग ले सकें। इस दृष्टिकोण की एक केंद्रीय विशेषता राजनीतिक शिक्षा है। एलेन ने तर्क दिया कि लोकतांत्रिक परिवर्तन मतदाताओं के सचेत विकास पर निर्भर करता है। तर्कसंगत जागरूकता के अभाव में, जन-भागीदारी को लोकलुभावन बयानबाज़ी द्वारा आसानी से प्रभावित या नियंत्रित किया जा सकता है। इसलिए, उन्होंने सार्वजनिक चर्चाओं, अध्ययन मंडलों और संगठित राजनीतिक भागीदारी के माध्यम से नागरिकों को शिक्षित करने के लिए निरंतर प्रयासों पर ज़ोर दिया। इस रूपरेखा में, शिक्षा राजनीति से अलग नहीं है, बल्कि स्वयं एक प्रकार का लोकतांत्रिक अभ्यास है।

इस अवधारणा में, आर्थिक संगठन भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उनका मानना था कि लोकतांत्रिक शासन उत्पादन और वितरण पर नियंत्रण से निर्णायक रूप से जुड़ा हुआ है। 'जन सरकार' (People's Government) लोकतंत्र का विस्तार

राजनीतिक दायरे से आगे बढ़ाकर करती है। इस व्यवस्था में, सहकारी संरचनाएँ आर्थिक जीवन में साझा ज़िम्मेदारी और लोकतांत्रिक भागीदारी पर आधारित हैं।

एलेन ने कहा कि 'जन सरकार' गतिशील और विकसित होने वाली प्रक्रिया होनी चाहिए, जो निरंतर भागीदारी और प्रयोगों से आकार लेती हो। इसकी वैधता इस बात से तय होती है कि यह लोगों की ज़रूरतों और आकांक्षाओं के प्रति कितनी संवेदनशील और जवाबदेह बनी रहती है।

इस प्रकार, 'जन सरकार' का उद्देश्य भागीदारी, सहयोग और शिक्षा के माध्यम से समाज का पुनर्गठन करना है। यह प्रचलित राष्ट्रवादी व्यवस्था की आलोचना करते हुए, यह एक नई लोकतांत्रिक व्यवस्था के निर्माण के लिए रूपरेखा प्रस्तुत करती है, जिसकी जड़ें लोगों की सक्रियता में निहित हैं। Radical Democracy राजनीतिक भागीदारी की दार्शनिक नींव की रूपरेखा तैयार करता है, और 'जन सरकार' का विचार इस दृष्टिकोण को एक ठोस कार्यक्रम में बदल देता है।

बढ़ती सामाजिक असमानताओं, राजनीतिक अलगाव और प्रतिनिधि संस्थाओं में घटते जन-विश्वास के समकालीन संदर्भ में, सहभागी शासन और सामूहिक ज़िम्मेदारी पर उनका ज़ोर एक वैकल्पिक ढाँचा प्रस्तुत करता है, जो लोगों की सक्रियता और सशक्तिकरण को प्राथमिकता देता है।

साझेदारी: एक बौद्धिक सहयोग, न कि निर्भरता

> "...स्वतंत्रता की एक नई दुनिया बनाने के लिए, क्रांति को समाज के केवल आर्थिक पुनर्गठन से आगे बढ़ना होगा। स्वतंत्रता का परिणाम अनिवार्य रूप से यह नहीं होता कि उत्पीड़ित और शोषित वर्गों के नाम पर राजनीतिक सत्ता पर कब्ज़ा कर लिया जाए और उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व को समाप्त कर दिया जाए।"

एलेन और एम. एन. रॉय के बीच के रिश्ते को अक्सर व्यक्तिगत गठबंधन के रूप में देखा जाता है। अधिकांश दस्तावेज़ों में एलेन को रॉय के बौद्धिक जीवन में, केवल सहायक भूमिका में ही दर्शाया गया है। इन विवरणों में उनके आपसी जुड़ाव के एक ऐसे पहलू को नज़रअंदाज़ कर दिया गया है, जो एक 'पारस्परिक बौद्धिक साझेदारी' पर आधारित था–जिसमें राजनीतिक विचारों, संगठनात्मक कार्यों और दार्शनिक विकास का सृजन दोनों ने मिलकर किया था।

एलेन की मुलाकात एम. एन. रॉय से 1920 के दशक के अंत में, यूरोप के राजनीतिक हलकों में हुई थी। उस समय, दोनों ही पारंपरिक साम्यवाद की सीमाओं पर पुनर्विचार करने और उसके वैकल्पिक ढाँचों की खोज करने में जुटे थे। क्रांति की अवधारणा को नए सिरे से गढ़ने की उनकी साझा प्रतिबद्धता ने उनके बौद्धिक मिलन को आकार दिया। शुरुआत से ही, उनका रिश्ता साम्राज्यवाद-विरोध, लोकतंत्र और स्वतंत्रता के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता में पिरोया हुआ था।

उनकी साझेदारी का महत्वपूर्ण आयाम उस समय सामने आया, जब एम. एन. रॉय को औपनिवेशिक सत्ता द्वारा कारागार में डाल दिया गया था (1931 से 1936 तक)। उस दौर में, एलेन लगातार उनके साथ पत्राचार करती रहीं। ये बातचीत बाद में 'लेटर्स फ्रॉम जेल' (1943) में छपी, जिसे अक्सर "क्रांतिकारी आत्मीयता के दस्तावेज़" कहा जाता है, क्योंकि ये राजनीतिक चिंतन, दार्शनिक बहस और आपसी साथ के गहरे जुड़ाव को दिखाते हैं।

इस दौरान, एलेन ने किताबें, पत्रिकाएँ और लिखने का सामान उपलब्ध कराकर उनके बौद्धिक काम को जारी रखने में अहम भूमिका निभाई। उनके सहयोग से, रॉय ने बड़े पैमाने पर 'जेल पांडुलिपियाँ' तैयार कीं, जिनमें लगभग 3,000 पृष्ठ थे और जो नौ खंडों में प्रकाशित हुईं; बाद में यही पांडुलिपियाँ 'रेडिकल ह्यूमनिज़्म' के विकास की नींव बनीं। राजनीतिक दमन के माहौल में, इस विचार को आगे बढ़ाने के लिए यह सहयोग बेहद ज़रूरी हो गया था।

साथ ही, एलेन ने उनकी रिहाई के लिए अंतरराष्ट्रीय अभियान चलाया; उन्होंने कई देशों के राजनीतिक नेताओं, बुद्धिजीवियों और संगठनों से संपर्क साधा। उनमें जवाहरलाल नेहरू भी शामिल थे, जो रॉय की 'रक्षा समिति' से जुड़े थे। उनके बीच हुए पत्राचार से रॉय के स्वास्थ्य और जेल में बिताए समय को लेकर एलेन की चिंता, और साथ ही इस मामले के व्यापक राजनीतिक प्रभावों का पता चलता है।

इसके अलावा, एलेन ब्रिटेन भी गईं, जहाँ उन्होंने 'लेबर पार्टी' के नेताओं से मुलाकात की और इस मामले पर चर्चा की। उनके इन लगातार प्रयासों और व्यापक अंतरराष्ट्रीय संपर्कों के चलते, आखिरकार रॉय की जेल की सज़ा बारह साल से घटाकर छह साल कर दी गई। उनके ये प्रयास अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संपर्क बनाने की उनकी गहरी समझ को दर्शाते हैं। पत्राचार, वकालत और संगठनात्मक कार्यों के ज़रिए, उन्होंने रॉय की जेल की सज़ा के मुद्दे को उपनिवेशवाद और स्वतंत्रता पर चल रही वैश्विक बहस का हिस्सा बनाया।

उनके रिश्ते का यह दौर एलेन की राजनीतिक सक्रियता को दर्शाता है। रॉय की कारावास अवधि के दौरान एम. एन. रॉय और एलेन के बीच हुए पत्राचार से यह संकेत मिलता है कि उन्होंने 'फ्रैंकफर्ट Frankfurt स्कूल' Germany की तर्ज पर भारत में भी एक समकक्ष संस्था स्थापित करने की संभावना पर विचार-विमर्श किया था।[2] यद्यपि यह विचार मूर्त रूप नहीं ले सका, तथापि यह तर्कसंगत रूप से बाद

---

[2] ज़्यादा जानकारी के लिए, कृपया इन पत्रों को देखें: 13 सितंबर 1932 को बरेली सेंट्रल जेल से रॉय का एलेन को पत्र; 20 सितंबर 1934 को अल्मोड़ा ज़िला जेल से रॉय का एलेन को पत्र; 22 मार्च 1936 को देहरादून ज़िला जेल से रॉय का एलेन को पत्र; और 24 मई 1936 को

में 'इंडियन रेनेसां इंस्टीट्यूट' की स्थापना में संस्थागत अभिव्यक्ति पा सका। शिवनारायण रे ने भी इस संदर्भ में टिप्पणी की है:

> "अपने पत्रों के माध्यम से, उन्होंने रॉय को सांत्वना और संबल प्रदान करने का प्रयास किया... उन्होंने रॉय को अपने स्वयं के साहित्यिक प्रयासों के बारे में लिखा, और जेल से रिहा होने के उपरांत एक 'अनुसंधान संस्थान-सह-प्रकाशन गृह' स्थापित करने हेतु आवश्यक सहयोग जुटाने की संभावनाओं को उनकी ओर से टटोला।"

ये लेख दर्शाते हैं कि इस संस्थान की परिकल्पना संयुक्त रूप से की गई थी। एलेन ने इसके वैचारिक और व्यावहारिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अतः, वे इस पहल की एक सह-निर्मात्री थीं। इस परिप्रेक्ष्य में, एलेन न केवल एक सहयोगी थीं, अपितु संस्थागत और बौद्धिक दिशाओं को आकार देने में एक सक्रिय भागीदार भी थीं।

रॉय की रिहाई के उपरांत उनकी साझेदारी का विवाह-बंधन में परिणत होना और देहरादून में उनका संयुक्त निवास—इन समस्त घटनाक्रमों को एक साझा बौद्धिक परिवेश के अंतर्गत उनके संयुक्त राजनीतिक कार्य की निरंतरता के रूप में समझा जाना चाहिए। भारत वह कर्मभूमि बनी, जहाँ पत्रिकाओं, संगठनों और राजनीतिक पहलों के माध्यम से उनके विचारों को संस्थागत रूप प्रदान किया गया; ये समस्त उपक्रम उनके संयुक्त प्रयासों के प्रतिबिंब थे।

इस प्रकार, एलेन और एम. एन. रॉय के मध्य बौद्धिक साझेदारी, पारस्परिक प्रभाव और साझा प्रतिबद्धता के एक जटिल अंतर्संबंध का प्रतिनिधित्व करती है। इस साझेदारी ने 'रेडिकल ह्यूमनिज़्म' (नव मानववाद) को एक सुसंगत बौद्धिक एवं राजनीतिक आंदोलन के रूप में विकसित होने में सक्षम बनाया। इस आंदोलन की

देहरादून ज़िला जेल से रॉय का एलेन को पत्र। एलेन की तरफ़ से इन पत्रों के जवाब का रिकॉर्ड मौजूद नहीं है, फिर भी इन पत्रों में, दूसरी बातों के अलावा, उन्होंने फ्रैंकफर्ट इंस्टीट्यूट के भारतीय version के विचार पर चर्चा की थी। फ्रैगमेंट्स ऑफ़ प्रिज़न डायरी वॉल्यूम III, लेटर्स फ्रॉम जेल, रेनेसां पब्लिकेशन, देहरादून।

सफलता एलेन की संगठनात्मक क्षमता और उनके बौद्धिक श्रम पर भी निर्भर थी।

यह दिखाता कि 'रेडिकल ह्यूमनिज़्म' किस प्रकार एक सहयोगात्मक बौद्धिक परियोजना के रूप में उभरा जिसे राजनीतिक संघर्ष और दार्शनिक पुनर्निर्माण के साझा अनुभवों द्वारा आकार प्रदान किया गया। यह साझेदारी संरचनात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण थी, क्योंकि इसने 'रेडिकल ह्यूमनिज़्म' को दार्शनिक अवधारणा के दायरे से निकालकर एक सुसंगठित बौद्धिक आंदोलन के रूप में देखा।

एक संस्थागत और बौद्धिक परियोजना के रूप में रैडिकल ह्यूमनिज़्म

> "हमारा दर्शन जीवन का दर्शन है, मानव जीवन का। हमारी चिंता का केंद्र मानव है, और बाकी सब कुछ भी, लेकिन केवल उस हद तक, जिस हद तक उसका संबंध मानव जीवन से है। क्योंकि, ज्ञान में वृद्धि उसे अधिक स्वतंत्रता प्रदान करती है, और स्वतंत्रता न केवल उसका जन्मसिद्ध अधिकार है, बल्कि उसके समस्त प्रयासों का मूल और अंतिम लक्ष्य भी है।"

रैडिकल ह्यूमनिज़्म के उदय का श्रेय मुख्य रूप से एम. एन. रॉय को दिया जाता है; इस तरह की संकुचित व्याख्या एलेन की उस निर्णायक भूमिका को नज़रअंदाज़ कर देती है, जिसने इसे एक संगठित बौद्धिक आंदोलन का रूप दिया। उन्होंने पत्रिकाओं, संगठनों, शैक्षिक पहलों और अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्कों के माध्यम से रैडिकल ह्यूमनिज़्म को एक जीवंत व्यवहार का रूप प्रदान किया।

1937 में भारत में बसने के बाद, एलेन और एम. एन. रॉय ने एक नया बौद्धिक मंच विकसित किया, जो आगे चलकर 'इंडिपेंडेंट इंडिया' नामक पत्रिका के रूप में सामने आया, और 1949 में इसी पत्रिका का नाम बदलकर 'द रैडिकल ह्यूमनिस्ट' कर दिया गया। रॉय के साथ मिलकर, एलेन ने राजनीतिक संगठन की अवधारणा को एक नया रूप दिया और 'रैडिकल डेमोक्रेटिक पार्टी' की स्थापना की। उनका मानना था कि राजनीतिक परिवर्तन के लिए वैचारिक स्पष्टता और एक सुदृढ़ संस्थागत आधार का होना अनिवार्य है।

एलेन ने देश का भ्रमण किया; इस दौरान उन्होंने विभिन्न सभाओं को संबोधित किया, अध्ययन समूहों का आयोजन किया, और बुद्धिजीवियों, श्रमिकों तथा कार्यकर्ताओं के साथ संवाद स्थापित किया। इन चर्चा-परिचर्चाओं के नेटवर्कों के माध्यम से, उन्होंने नव मानववाद के दायरे को विस्तृत करते हुए इसे व्यापक

आंदोलन का रूप दिया। उनकी यह सक्रियता इस दृढ़ विश्वास पर टिकी थी कि परिवर्तन के लिए 'चेतना' का जागृत होना आवश्यक है।

एलेन ने निरंतर कहा कि रैडिकल ह्यूमनिज़्म विचारों का एक गतिशील आंदोलन है, जिसमें समाज को एक नया स्वरूप प्रदान करने की असीम क्षमता है। उनका मानना था कि यह आंदोलन स्वतंत्र, विवेकशील और नैतिक रूप से उत्तरदायी व्यक्तियों के निर्माण के माध्यम से "मानव इतिहास में नए कीर्तिमान स्थापित करने" की क्षमता रखता है। उनके दृष्टिकोण में, नव मानववाद की सफलता इस बात पर निर्भर करती थी कि हम ऐसे अनुकूल वातावरण का निर्माण करें, जो हमारे जीवन में 'विवेक' (तर्कबुद्धि) के विकास और संवर्धन को सुनिश्चित कर सके। उन्होंने लिखा:

> "हमारी सफलता इस बात में निहित होगी कि हम ऐसे अनुकूल वातावरण का निर्माण कर सकें, जिसमें समस्त संस्थाओं का भावी विकास और उनमें होने वाला सुधार—जो अंततः मानव की अधिक स्वतंत्रता और सुख-समृद्धि की दिशा में अग्रसर हो—उन संस्थाओं के अपने मूल स्वरूप में ही अंतर्निहित हो। ये संस्थाएँ ऐसे स्वतंत्र और विवेकशील मनुष्यों द्वारा ही निर्मित और संचालित हों, जो नैतिक वे विवेकशील हैं; और जहाँ सत्ता-शक्ति तथा निहित स्वार्थों से जुड़ी संकीर्ण सोच को घृणा और उपहास की दृष्टि से देखा जाता हो।"

एलन का मानना था कि सत्ता, प्रभुत्व और निहित स्वार्थों से जुड़े विचार अंततः सहयोग, नैतिक ज़िम्मेदारी और मानवीय गरिमा में निहित मूल्यों के आगे झुक जाने चाहिए। इसलिए, रेडिकल ह्यूमनिज़्म को संस्थागत रूप देने की उनकी रणनीति की शुरुआत, व्यक्ति को बदलने से हुई। उन्होंने तर्क दिया कि बदलाव को समाज के भीतर ही व्यापक दार्शनिक और सांस्कृतिक क्रांति से उभरना होगा।

उन्होंने 'द मार्क्सियन वे' और 'रेनेसां पब्लिशर्स' की स्थापना में भी अहम भूमिका निभाई। ये प्रकाशन तर्कवादी विचारों के आंदोलन के लिए संगठनात्मक साधनों

के रूप में काम करते थे। प्रचार-प्रसार और शैक्षिक पहलों के माध्यम से, उन्होंने रेडिकल ह्यूमनिज़्म को लोकतांत्रिक पुनर्निर्माण के जीवंत विचार का रूप दिया।

1946 में, उन्होंने 'इंडियन रेनेसां इंस्टीट्यूट' की स्थापना में मदद की, जिसका उद्देश्य मानववाद और तर्कसंगत सोच को बढ़ावा देना था। यह संस्था उनके इस विश्वास को दर्शाती है कि राजनीतिक बदलाव को ऐसे सांस्कृतिक और शैक्षिक बुनियादी ढांचे का समर्थन मिलना चाहिए, जो आलोचनात्मक सोच और लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रखने में सक्षम हो।

एलन के अनुसार, निरंतर नैतिक आचरण, संवाद और कर्म के माध्यम से मानवीय समाज का निर्माण किया जा सकता है। यदि लोग व्यक्तिगत और सामाजिक समस्याओं के लिए तर्कसंगत समाधानों को अपनाते हैं, तो एक दार्शनिक क्रांति उभरेगी, जो एक बदलाव की ओर ले जाएगी। इसलिए, रेडिकल ह्यूमनिज़्म की सफलता उन व्यक्तियों के विस्तार पर निर्भर थी, जो अपने दैनिक जीवन में तर्कसंगतता और नैतिकता को अपनाते हों। उनके विचार में, संस्थाएँ तब विकसित होती हैं जब व्यक्ति सोचने के नए तरीकों को व्यवहार में लाते हैं।

इस प्रकार, नव मानववाद एक सहयोगात्मक और अंतरराष्ट्रीय परियोजना थी, जिसे एलन की संगठनात्मक दृष्टि और तर्कसंगत-लोकतांत्रिक संस्कृति के प्रति उनकी प्रतिबद्धता ने महत्वपूर्ण रूप से आकार दिया। उनके प्रयासों के कारण, इस बौद्धिक परियोजना को संस्थागत रूप दिया गया, जिसने दार्शनिक अन्वेषण को सार्वजनिक जुड़ाव से जोड़ा।

दार्शनिक तंत्र के रूप में मानववाद

> "समाज, जो मनुष्य की ही रचना है, और उस मनुष्य के अलावा कुछ भी नहीं है जो इसे बनाता और रचता है, वह भी भौतिक ब्रह्मांड का एक हिस्सा है और तर्कसंगतता, तर्क और कार्य-कारण के नियमों के अधीन है।"

एलेन की चिंता के मूल में मानवीय गरिमा थी, क्योंकि उनके लिए Radical Humanism विचारों का एक ऐसा आंदोलन था जिसमें तर्कसंगतता और नैतिकता शामिल थी। उन वैचारिक प्रणालियों के विपरीत जो राज्य की शक्ति को प्राथमिकता देती हैं, एलेन ने नैतिक जिम्मेदारी, कल्याण और तर्क तथा करुणा पर आधारित लोकतांत्रिक सोच पर ज़ोर दिया। उनका मानना था कि सार्थक परिवर्तन के लिए स्वतंत्र व्यक्तियों के विकास की आवश्यकता होती है, जिनका मार्गदर्शन तर्क द्वारा किया जाए। उनके लिए मानववाद प्रगति की एक ऐसी कुंजी है जो स्वतंत्रता की खोज और सत्य की तलाश पर आधारित है, जैसा कि उन्होंने कहा:

> "मानववाद की आकांक्षा स्वतंत्र पुरुषों और महिलाओं के एक विश्वव्यापी समाज को विकसित करने में मदद करना है—एक ऐसा समाज जिसमें व्यक्तिगत जीवन, आचरण, सामाजिक संबंध और संस्थाएँ व्यक्तिगत रचनात्मकता और प्रबुद्ध सहयोग की भावना से ओत-प्रोत हों।"

इस ढाँचे में, स्वतंत्रता का अर्थ है "सभी व्यक्तियों की क्षमताओं पर लगी सभी पाबंदियों का धीरे-धीरे समाप्त हो जाना... किसी भी प्रयास की सफलता को उसके घटक इकाइयों को मिलने वाले वास्तविक लाभों से मापा जाना चाहिए।

इसलिए, मानववाद राजनीतिक संगठन नहीं है, बल्कि बौद्धिक और नैतिक पुनर्संयोजन की एक प्रक्रिया है। इसकी सफलता उन व्यक्तियों के विस्तार पर निर्भर करती है जो अपने रोज़मर्रा के जीवन में तर्कसंगतता, नैतिक स्वतंत्रता और लोकतांत्रिक चेतना को अपनाते हैं। रेडिकल ह्यूमनिज़्म के बारे में उनकी समझ

ने विचारों, दृष्टिकोणों और नैतिक चेतना में धीरे-धीरे बदलाव लाकर समाज को बदलने के महत्व पर ज़ोर दिया। उनका मानना था कि संस्थाओं को भी व्यक्तियों के नैतिक दृष्टिकोण में बदलाव के साथ विकसित होना चाहिए। उन्होंने लिखा:

> "रेडिकल ह्यूमनिस्ट आंदोलन संस्थाओं को मौजूदा समाज के भीतर और बाहर विकसित होने देगा, जब भी और जहाँ भी लोगों का मानसिक दृष्टिकोण बदलेगा... । इसे इंसानों, उनके विचारों, उनके व्यवहार और उनके कार्यों द्वारा बनाया जाता है। अगर हम अपने विचारों को अपने साथी नागरिकों की तर्कशक्ति के लिए आकर्षक और स्वीकार्य बना सकें, और अगर हमारे कार्य व्यक्तिगत और सामाजिक समस्याओं के ऐसे तर्कसंगत समाधान सुझाएँ जिन्हें हमारे आस-पास के लोग लागू कर सकें - तो मानसिक माहौल बदल जाएगा। लोगों के मन में एक दार्शनिक क्रांति शुरू हो होगी और यह रेडिकल ह्यूमनिज़्म के विचारों से प्रेरित सामाजिक बदलावों का अग्रदूत बनेगी।"

एलन ने कहा कि सामाजिक बदलाव रोज़मर्रा के विचारों और व्यवहार के दायरे में शुरू होता है, और मानसिक स्थितियों में होने वाले बदलावों के ज़रिए सामने आता है। उन्होंने "मानसिक वातावरण" की अवधारणा पेश की, और यह तर्क दिया कि समाज तब बदलते हैं जब विचार, व्यवहार और आपसी लेन-देन नए मूल्यों को दर्शाते हैं।

इसलिए, उन्होंने 'रेडिकल ह्यूमनिज़्म' की कल्पना एक "दार्शनिक क्रांति" के रूप में की—चेतना में धीमा लेकिन गहरा बदलाव, जो आगे चलकर व्यापक बदलाव का कारण बनेगा। यदि तर्क, स्वतंत्रता और नैतिक ज़िम्मेदारी के विचार व्यापक रूप से स्वीकार किए जाते हैं और व्यवहार में लाए जाते हैं, तो वे धीरे-धीरे संस्थाओं को नया रूप देते हैं। उनके अनुसार, नव मानववाद आंदोलन की सफलता स्वतंत्रता की दिशा में स्थितियाँ बनाने में निहित है; और इसलिए, यह आंदोलन कभी भी पूर्ण नहीं हो सकता। इस प्रकार, उनकी बौद्धिक विरासत ने दर्शनशास्त्र, जीवन के अनुभवों और विचारों तथा व्यवहार के बीच एक जुड़ाव स्थापित किया।

संक्षेप में, रेडिकल ह्यूमनिज़्म गहन पड़ताल और लोकतांत्रिक व्यवहार का जीवंत दर्शन है, जहाँ विचार ऐतिहासिक बदलावों के अनुरूप संशोधन और नवीनीकरण के लिए सदैव खुले रहते हैं। आज के समकालीन विश्व में—जो वैचारिक ध्रुवीकरण, लोकतांत्रिक संकटों और तेज़ी से बदलती वास्तविकताओं से घिरा हुआ है—तर्कसंगत चिंतन, नैतिक ज़िम्मेदारी और बौद्धिक खुलेपन पर उनका ज़ोर, लोकतांत्रिक और मानवतावादी राजनीति पर पुनर्विचार करने के लिए प्रासंगिक है।

Ellen as a young girl

Photo courtesy: From the World Her Village, Edited by Sibnarayan Ray

भारत: एक राजनीतिक और बौद्धिक घर

> "…मानवीय इच्छाशक्ति ही सबसे शक्तिशाली निर्णायक कारक है। अन्यथा, इतिहास की तार्किक रूप से निर्धारित प्रक्रिया में क्रांतियों के लिए कोई जगह ही न होती।"

एलन का भारत में ही रहने का निर्णय केवल विवाह या व्यक्तिगत परिणाम मात्र नहीं था; यह एक सुविचारित राजनीतिक और दार्शनिक प्रतिबद्धता को दर्शाता था। भारत वह मुख्य ऐतिहासिक मंच बन गया, जहाँ उनका मानना था कि उनकी बौद्धिक और राजनीतिक दृष्टि को सार्थक रूप से साकार किया जा सकता है।

एलन के लिए, भारत की स्वतंत्रता का अर्थ केवल औपनिवेशिक शासकों से सत्ता का हस्तांतरण स्थानीय elite को होना नहीं था। उन्होंने इसे समाज के पुनर्निर्माण के लिए तर्कसंगत, लोकतांत्रिक और सहयोगात्मक सिद्धांतों पर आधारित एक दुर्लभ ऐतिहासिक अवसर के रूप में पहचाना। उनकी दृष्टि में, स्वतंत्रता ने असमानता और हिंसा की विरासत में मिली प्रणालियों से मुक्त एक नई राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था बनाकर "नए सिरे से शुरुआत करने" की संभावना प्रदान की। इस प्रकार, उन्होंने स्वतंत्रता की परिकल्पना पुनर्निर्माण की सक्रिय और रचनात्मक प्रक्रिया के रूप में की।

उन्होंने स्वतंत्रता (Independence) और आज़ादी (Freedom) के बीच स्पष्ट अंतर किया। उनके लिए, स्वतंत्रता का अर्थ था बाहरी प्रभुत्व की अनुपस्थिति, जबकि आज़ादी का तात्पर्य था व्यक्तियों और समाजों की मानवीय क्षमता को विकसित करने की योग्यता। राजनीतिक अधीनता—जिसमें ज़बरदस्ती, शोषण या असमानता शामिल है—व्यक्तियों से उनकी मानवता छीन लेती थी। इसलिए, वास्तव में स्वतंत्र समाज को आम लोगों को उनका गरिमापूर्ण स्थान पुनः प्रदान करना था।

उन्होंने लोगों को ऐसे समूहों (collectives) में सीमित करने का कड़ा विरोध किया, जिन्हें युद्ध या सत्तावादी शासन के लिए लामबंद किया जा सके। इसके बजाय, उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि समाजों का पुनर्निर्माण स्वतंत्र व्यक्तियों के बीच स्वायत्तता, रचनात्मकता और सहयोग के आधार पर किया जाना चाहिए।

एलन ने "सत्ता" को दूसरों पर प्रभुत्व के रूप में नहीं, बल्कि सामूहिक रूप से कार्य करने, सहयोग करने और निर्माण करने की रचनात्मक मानवीय क्षमता के रूप में पुनर्परिभाषित किया। उनके लिए, एक वास्तविक राजनीतिक परिवर्तन के लिए सत्ता के विकेंद्रीकरण और व्यक्तियों की सक्रिय भूमिका आवश्यक थी। परिणामस्वरूप, व्यक्तियों और समुदायों के लिए वास्तविक आज़ादी, राज्य की औपचारिक संप्रभुता की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। उन्होंने इस दृष्टिकोण को स्पष्ट रूप से तब व्यक्त किया, जब उन्होंने कहा:

> "मेरा दृढ़ विश्वास है कि स्वतंत्रता का अर्थ है—लगभग चालीस करोड़ भारतीयों के बीच ज्ञान का प्रकाश फैलाना, तथा मानवीय गरिमा और आत्मविश्वास की चेतना जागृत करना; ऐसे जागृत व्यक्तियों के साथ मिलकर देश के आर्थिक जीवन की योजना इस प्रकार बनाना कि वह तकनीकी रूप से उन्नत और वैज्ञानिक रूप से संगठित सहकारी समितियों पर आधारित हो—जो यथासंभव विकेंद्रित हों—और जिसमें पूर्ण विद्युतीकरण सुनिश्चित हो; तथा पंचायत व्यवस्था को विकसित करके एक स्वतंत्र, संप्रभु और लोकतांत्रिक राजनीतिक प्रणाली का रूप देना।"

अतः, उनके लिए भारत संभावनाओं का एक ऐसा क्षेत्र बन गया, जहाँ Radical Humanism संस्थागत व्यवहार का रूप ले सकता था। उन्होंने यह भली-भांति अनुभव किया कि औपनिवेशिक-पश्चात समाज के समक्ष मुख्य कार्य यह था कि वह आर्थिक जीवन, शिक्षा और नागरिक चेतना को तर्क और गरिमा के आधार पर पुनर्गठित करे।

स्वतंत्रता के बारे में उनकी सोच आर्थिक न्याय और खुशहाली से जुड़ी थी। उनका तर्क था कि आज़ादी तब तक अधूरी रहेगी, जब तक उसके साथ गरीबी, असुरक्षा

और अभाव से मुक्ति न हो। सेना बढ़ाने या सरकारी ज़ोर-ज़बरदस्ती को प्राथमिकता देने के बजाय, उन्होंने संसाधनों को विकास, शिक्षा और जन-कल्याण की ओर लगाने की वकालत की। उनकी नज़र में, स्वतंत्रता को इस आधार पर मापा जाना चाहिए कि उसका मानवीय गरिमा पर क्या असर पड़ता है। उन्होंने लिखा:

> "...अगर उसकी (भारत की) अच्छी आर्थिक स्थिति का इस्तेमाल उत्पादन के लिए, उसकी करोड़ों की आबादी का जीवन-स्तर ऊपर उठाने के लिए, एक आधुनिक आर्थिक व्यवस्था बनाने के लिए और भारत को वह एक आज़ादी दिलाने के लिए किया जाए जो सबसे ज़्यादा मायने रखती है (क्योंकि यह आज़ादी बाकी सभी आज़ादियों की गारंटी देती है)—यानी अभाव से मुक्ति।"

उन्होंने ऐसी विकेंद्रीकृत, सहकारी अर्थव्यवस्था की कल्पना की, जो वैज्ञानिक योजना और सामूहिक भागीदारी पर आधारित हो। एलेन के लिए, ऐसी व्यवस्थाएँ यह सुनिश्चित करने के लिए ज़रूरी थीं कि स्वतंत्रता केवल नाममात्र की संप्रभुता बनकर न रह जाए, बल्कि एक वास्तविक आज़ादी में बदल जाए।

इसलिए, भारत के साथ उनका जुड़ाव, अंतर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी सक्रियता से हटकर, लोकतांत्रिक पुनर्निर्माण के प्रति एक निरंतर प्रतिबद्धता की ओर हुए बदलाव को दर्शाता है। एलेन के लिए, भारत न तो कोई सांस्कृतिक आदर्श था जिसे बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जाए, और न ही कोई अनोखा "पूरब" था; बल्कि यह एक ऐसा वास्तविक संदर्भ था, जहाँ तर्कसंगत, सहकारी और मानववादी संस्थाएँ बनाई जा सकती थीं। पहचान की संकीर्ण धारणाओं को अस्वीकार करना, उनकी इसी व्यापक दार्शनिक सोच को दर्शाता था। उन्होंने एक बार कहा था:

> "खैर, मैं अपनी त्वचा का रंग तो नहीं बदल सकती; वरना, यह 'विदेशी' होने का मामला तो एक तरह का पिछड़ापन ही है।"

यह बयान राष्ट्रीयता और नस्ल की श्रेणियों के प्रति उनकी असहजता को दिखाता है। इसलिए, भारत के साथ उनका जुड़ाव सांस्कृतिक मेल-जोल से ज़्यादा, प्रगति के प्रति एक साझा नैतिक और बौद्धिक प्रतिबद्धता से प्रेरित था।

एलेन के भारत के साथ रिश्ते को, किसी भावनात्मक या राष्ट्रवादी अर्थ के तौर पर नहीं, बल्कि एक विशिष्ट संदर्भ में 'रेडिकल ह्यूमनिज़्म' की रणनीतिक स्थापना के तौर पर समझा जाना चाहिए। इसके अलावा, भारत में मिले अनुभवों ने उनकी राजनीतिक सोच का दायरा और भी बढ़ा दिया, जब उन्होंने अपने शुरुआती अनुभवों को नए आयामों के साथ जोड़ा। इस तरह, भारत वह जगह बन गया जहाँ लोकतंत्र, तर्कवाद, विकेंद्रीकरण और सहयोग से जुड़े उनके विचारों को विस्तार दिया गया और उन्हें संस्थागत रूप दिया गया।

एलेन का भारत के साथ जुड़ाव, एक विशिष्ट प्रकार की विश्व-नागरिक प्रतिबद्धता को दर्शाता है, जो राष्ट्रीय सीमाओं से परे थी और जिसने स्वतंत्रता की परिभाषा को पूरी तरह से बदल दिया। अपने लेखन और सक्रियता के माध्यम से, उन्होंने भारत की स्वतंत्रता को मानवीय मुक्ति के एक व्यापक अभियान से जोड़ा। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि राजनीतिक आज़ादी का सही मतलब तभी निकलता है, जब वह न्याय, गरिमा और व्यक्तिगत सशक्तिकरण में बदल जाए।

बढ़ती आर्थिक असमानता और लोकतांत्रिक शासन में लगातार बनी चुनौतियों के आज के दौर में, उनका यह नज़रिया बेहद प्रासंगिक है। औपचारिक राजनीतिक आज़ादी की सीमाओं से परे, यह इस बात पर अहम अंतर्दृष्टि देता है कि लोकतंत्र को किस तरह से फिर से गढ़ा जा सकता है—ताकि वह भागीदारी वाला, समावेशी और ज़मीनी हकीकत से जुड़ा हुआ हो।

रचनात्मक बुद्धिवाद और तर्क की नैतिकता

> "...आज़ादी की खोज, अस्तित्व के लिए चल रहे जैविक संघर्ष का ही एक ऊँचे स्तर पर विस्तार है। सत्य की खोज इसी का स्वाभाविक परिणाम है।"

एलन रॉय का दर्शन बुद्धिवादी सोच का एक अनोखा रूप विकसित करता है, जिसे वे "रचनात्मक बुद्धिवाद" कहती हैं। अंधविश्वास की आलोचना करने के बजाय, एलन ने एक व्यापक सिद्धांत पर विस्तार से बात की कि कैसे व्यक्ति दुनिया के साथ तर्कपूर्ण जुड़ाव के माध्यम से नैतिकता और व्यवस्था का अर्थ गढ़ते हैं। यह इस बात पर ज़ोर देता है कि वैज्ञानिक जाँच-पड़ताल और नैतिक चेतना ही प्रगति की नींव रखते हैं।

सत्तावाद की रेडिकल मानववादी आलोचना के अनुरूप, एलन ने तर्क दिया कि व्यक्तियों को अंधविश्वास, डर या हठधर्मिता पर निर्भर रहने के बजाय तर्कसंगत रूप से काम करना चाहिए। उन्होंने तर्क दिया कि आधुनिक दुनिया के संकट के लिए नैतिकता के एक नए आधार की आवश्यकता है, जो बाहरी दबाव या धार्मिक आदेशों के बजाय, तर्क से स्वेच्छा से उभरे। जैसा कि उन्होंने कहा:

> "हमारे समय के संकट का समाधान एक स्वैच्छिक, सहज नैतिकता के लिए एक वैध आधार खोजने पर निर्भर करता है। जब अन्य सभी आधार ऐसा करने में विफल रहे हैं, तो तर्क को—जिसे वैज्ञानिक और संयमित रूप से परिभाषित किया गया हो—एक मौका मिलना चाहिए..."

एलन के अनुसार, ईश्वर और धर्म—दोनों ही—ऐतिहासिक रूप से मनुष्यों द्वारा प्रकृति के रहस्यों और शक्तियों को समझाने के प्रयास में बनाए गए थे। इसका उद्देश्य अनिश्चितता और डर का सामना करना था। लोग उन शक्तियों को समझना चाहते थे जो उनके नियंत्रण से बाहर थीं। इसलिए, धर्म ने व्यक्तियों को भावनात्मक सुरक्षा और प्रतीकात्मक नियंत्रण का एहसास कराया।

एलन धर्म को अज्ञानता कहकर खारिज नहीं करतीं। इसके बजाय, वे इसे प्रकृति की अनिश्चितता के सामने अपनी सक्रियता (agency) साबित करने का मानवीय प्रयास मानती हैं। उनके अनुसार, प्रार्थनाएँ, रीति-रिवाज और दैवीय शक्तियों से की गई अपीलें प्राकृतिक घटनाओं को प्रभावित न करें, लेकिन वे लोगों को सुरक्षा का एक भ्रम ज़रूर देती हैं। ये अलौकिक ढाँचे व्यक्तियों को दुख, डर और असुरक्षा का सामना करने में मदद करते थे, और मुश्किल परिस्थितियों में उनका आत्मविश्वास बनाए रखते थे।

वे तर्क देती हैं कि वैज्ञानिक विकास और प्रकृति पर मनुष्य के बढ़ते नियंत्रण ने उन परिस्थितियों को बदल दिया है, जिनके तहत धार्मिक स्पष्टीकरणों की आवश्यकता थी। वैज्ञानिक ज्ञान के विस्तार के साथ, मानवता प्राकृतिक प्रक्रियाओं को समझने की क्षमता हासिल कर लेती है। आस्था से तर्क की ओर यह बदलाव, नई नैतिक नींव की संभावना पैदा करता है।

उनके अनुसार, तर्कवादी आंदोलन का काम धर्म की आलोचना करना नहीं, बल्कि ज्ञान का प्रसार करना, आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना और प्राकृतिक घटनाओं के पीछे के "क्यों" को समझाने के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना था। इसलिए, रचनात्मक तर्कवाद वैज्ञानिक समझ, नैतिक ज़िम्मेदारी और कर्तापन के आधार पर मानवीय अर्थों का पुनर्निर्माण करता है।

एलन के अनुसार, तर्कवाद व्यक्तियों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए प्रोत्साहित कर सकता था। उनके लिए, तर्कवादी आंदोलन केवल एक बौद्धिक अभ्यास नहीं था, बल्कि ऐसे विचार थे जो व्यक्तिगत और सामाजिक समस्याओं के लिए तर्कसंगत दृष्टिकोण प्रस्तुत करते थे। उन्होंने लिखा

> "यदि लोकतंत्र को शासन का सबसे अच्छा रूप माना जाता है, तो इसे सबसे तर्कसंगत प्रस्ताव के रूप में भी सिद्ध किया जाना चाहिए; और ऐसा तभी संभव है जब लोग—जो स्वयं पर शासन करने वाले हैं—अपनी बुद्धि (तर्कशक्ति) को अपनी सर्वोच्च और जन्मजात मानवीय विशेषता के रूप में पहचानना सीखें, और अपने स्वयं के भाग्य को गढ़ने में उसका उपयोग करें।"

एलन ने तर्क दिया कि लोकतंत्र तभी जीवित रहता है जब व्यक्ति इस तरह से जुड़ते हैं कि वे अपनी बुद्धि को अपनी सर्वोच्च मानवीय क्षमता के रूप में पहचानते हैं। तार्किक चेतना के अभाव में, लोकतंत्र हेर-फेर, लोकलुभावनवाद, या सत्तावादी नियंत्रण में बदल सकता है। उनके अनुसार, तार्किक और स्व-शासित नागरिक ऐसे वातावरण को बढ़ावा दे जो Radical Democracy के लिए अनिवार्य है।

एलन का 'मानव-केंद्रित तर्कवाद' ज्ञान स्वतंत्रता, गरिमा और रचनात्मकता को बढ़ाता है। सत्ता के प्रति आज्ञापालन करने के बजाय, व्यक्ति सामाजिक उत्तरदायित्व को समझते हैं। इसलिए, तर्कवाद एक स्व-सचेत नैतिक विकास को जन्म देता है। उन्होंने एक रचनात्मक ढांचे की परिकल्पना की, जिसमें एक लोकतांत्रिक, मानवीय और बौद्धिक रूप से स्वायत्त समाज की कल्पना की गई थी।

उनका रचनात्मक तर्कवाद Radical Humanism का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है, जो व्यक्तिगत बुद्धि को सामूहिक मुक्ति से जोड़ता है। इसलिए, तर्कवाद सशक्तिकरण का एक दर्शन बन जाता है, जो स्वतंत्र रूप से सोचने और सामूहिक रूप से समाज को आकार देने की मानवीय क्षमता को सुदृढ़ करता है। बुद्धि को स्वतंत्रता, नैतिकता और लोकतांत्रिक भागीदारी से जोड़कर, उन्होंने एक ऐसे विश्व की परिकल्पना की जिसमें व्यक्ति आलोचनात्मक चिंतन और नैतिक कार्यों के माध्यम से भय, हठधर्मिता और उत्पीड़न पर विजय प्राप्त करते हैं।

गलत सूचनाओं के बढ़ते प्रसार, पहचान-आधारित ध्रुवीकरण, सत्तावाद के बढ़ते दावों और तर्क-विरोधी राजनीति के समकालीन संदर्भ में, उनका तर्कवाद लोकतांत्रिक विचार-विमर्श, आलोचनात्मक जांच और नैतिक तर्कणा के लिए ढांचे के रूप में आज भी प्रासंगिक बना हुआ है।

रेडिकल मानववाद की संरक्षकता और निरंतरता

> "आधुनिक मनुष्य के सामने समस्या यह है कि वह अपने समाज को इस तरह से गढ़े कि स्वतंत्रता संभव हो सके। उसका भविष्य इसी समस्या के समाधान पर निर्भर करता है। हमारा दर्शन इस समस्या का समाधान कर सकता है, क्योंकि यह मनुष्य से शुरू होता है, इसका लक्ष्य उसकी स्वतंत्रता है, और यह इस लक्ष्य के अनुरूप कार्य की परिकल्पना करता है; यह इस तर्क पर आधारित है कि मनुष्य तर्कशील है और इसलिए नैतिक भी है; और केवल ऐसा कार्य ही स्वतंत्रता की ओर ले जा सकता है।"

1954 में एम.एन. रॉय के निधन से पहले, एलेन उनकी देखभाल और बौद्धिक कार्यों में शामिल रहीं। उन्होंने जवाहरलाल नेहरू सहित कई राजनीतिक नेताओं से संपर्क बनाए रखा, उन्हें रॉय के स्वास्थ्य के बारे में जानकारी देती रहीं, और उन व्यापक राजनीतिक व बौद्धिक हलकों से भी जुड़ी रहीं जो उनकी स्थिति को लेकर चिंतित थे।

एम.एन. रॉय का निधन Radical Humanism के लिए एक निर्णायक क्षण साबित हुआ, जिसने इसके अस्तित्व को लेकर एक प्रश्न खड़ा कर दिया। एलेन ने मुख्य संरक्षक के रूप में कमान संभाली, और इसे सतत संस्थागत अंतरराष्ट्रीय आंदोलन में बदल दिया। उन्होंने एक साथ कई स्तरों पर काम किया, जिसमें संगठनात्मक मामलों को संभालना, प्रकाशन कार्य और दस्तावेज़ीकरण शामिल था।

उन्होंने विचारों के प्रसार, बहस को बढ़ावा देने और तर्कवादियों, मानववादियों तथा विचारकों के बीच बौद्धिक जुड़ाव को बनाए रखने के उद्देश्य से 'द रेडिकल ह्यूमनिस्ट' का संपादन किया। अपने अथक प्रयासों के माध्यम से, उन्होंने इस आंदोलन को संरक्षित और विस्तारित करने के लिए संस्थागत ढांचा तैयार किया और उसे सुचारू रूप से चलाया। उन्होंने आंदोलन के अनुयायियों के बीच संवाद

बनाए रखने के लिए अध्ययन शिविरों, चर्चा मंचों और सार्वजनिक व्याख्यानों का आयोजन जारी रखा। ये मंच बौद्धिक सृजन और चिंतन के सक्रिय केंद्र बन गए।

एलेन ने अभिलेखीय संसाधनों–जिनमें एम.एन. रॉय के Archives भी शामिल थे–को संरक्षित करने के लिए कदम उठाए। उन्होंने एम.एन. रॉय द्वारा लिखित पुस्तक Reason, Romanticism, and Revolution के मूल पाठ को संकलित किया, और उनके अन्य लेखन कार्यों का संपादन किया। एलेन द्वारा इन के गहन संकलन और व्यवस्थित रूप दिए बिना, मानववाद की रूपरेखा प्रस्तुत करने वाला यह विस्तृत साहित्य शायद कभी अस्तित्व में ही न आता। उन्होंने विभिन्न सामग्री, पत्रों और ऐतिहासिक अभिलेखों का दस्तावेज़ीकरण किया, जिससे इस बौद्धिक आंदोलन को संरक्षित और जीवित रखने के प्रति उनका गहरा समर्पण और उत्साह स्पष्ट रूप से दिखता है।

अपनी दूरदर्शी सोच के साथ, उन्होंने आंदोलन की सदस्यता बढ़ाने, इसके लिए आवश्यक धन जुटाने और मानववाद के विचारों का व्यापक प्रसार करने की दिशा में ठोस कदम उठाए। अप्रैल 1957 में 'रेडिकल ह्यूमनिस्ट' की वर्षगांठ मनाते हुए, उन्होंने नेताओं, शिक्षाविदों और संस्थानों को पत्र लिखकर इसमें योगदान देने का आग्रह किया; इनमें तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित नेहरू भी शामिल थे। ये सभी कार्य रेडिकल ह्यूमनिज़्म के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।

1957 और 1958 के बीच, एलेन ने 'इंडियन रैशनलिस्ट एसोसिएशन' की अध्यक्ष के रूप में कार्य किया, जिससे तर्कवादी और मानववादी बौद्धिक परिदृश्य में एक अग्रणी हस्ती के रूप में उनकी भूमिका और भी मज़बूत हुई। राष्ट्रीय और वैश्विक सम्मेलनों तथा संगठनात्मक पहलों में उनकी भागीदारी इस आंदोलन का विस्तार करने के प्रति उनके उत्साह को दर्शाती है।

1950 के दशक के मध्य में उनकी अंतर्राष्ट्रीय यात्राओं ने इन नेटवर्कों को अधिक सुदृढ़ किया। उन्होंने 'इंटरनेशनल ह्यूमनिस्ट एंड एथिकल यूनियन' (IHEU) सहित विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मानववादी संगठनों के साथ जुड़ाव के माध्यम से अपने

नेतृत्व और समर्पण का प्रदर्शन किया। इन अंतर्राष्ट्रीय जुड़ावों ने विश्वबंधुत्व (cosmopolitanism) के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को बल प्रदान किया।

यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका की यात्राओं के दौरान, एलेन ने मानववादी और तर्कवादी समूहों के साथ संवाद स्थापित किया, विचारों का आदान-प्रदान किया और बौद्धिक गठबंधन निर्मित किए। इन संवादों ने नव मानववाद को धर्मनिरपेक्ष नैतिकता, लोकतंत्र और मानवाधिकारों पर आधारित वैश्विक विमर्श में स्थापित करने में सहायता की। इन्हीं यात्राओं के दौरान, उनकी मुलाकात एवलिन ट्रेंट से हुई, जिसके माध्यम से उन्होंने नारीवादी एकजुटता व्यक्त की।

संक्षेप में, 1954 में एम.एन. रॉय के निधन के बाद, एलेन ने भारत में ही रहने का निर्णय लिया और उनके द्वारा संयुक्त रूप से शुरू किए गए कार्यों को जारी रखा। उनके प्रयासों से, Radical Humanism एक सामूहिक बौद्धिक आंदोलन के रूप में विकसित हुआ। उनके नेतृत्व, संस्थागतकरण और सुदृढ़ीकरण ने आंदोलन के अस्तित्व और निरंतरता को सुनिश्चित किया। इन महत्वपूर्ण योगदानों के बावजूद, उन्हें केवल रॉय की साथी के रूप में याद किया जाता है, न कि एक बौद्धिक कार्यकर्ता और मानववाद की सह-निर्माता के रूप में।

एलन की मृत्यु और उनकी बौद्धिक विरासत

> "लोकतंत्र का लक्ष्य समाज की ऐसी स्थिति है जिसमें सभी लोग समुदाय के मामलों में भाग लेते हैं, समाज को आकार देने में अपने विचारों और कार्यों के माध्यम से अपना योगदान देते हैं, ताकि सभी को अपनी क्षमताओं को विकसित करने का अवसर मिल सके।"

एलन के जीवन का दुखद अंत तब हुआ जब 14 दिसंबर 1960 को देहरादून में रहस्यमय परिस्थितियों में उनकी हत्या कर दी गई। हालाँकि उनकी मृत्यु से जुड़ी परिस्थितियाँ स्पष्ट नहीं हैं, फिर भी उनकी बौद्धिक और राजनीतिक विरासत उनके लेखन, उनके सक्रियतावाद, उनके द्वारा स्थापित संस्थाओं, उनके द्वारा संपादित पत्रिकाओं और 'रैडिकल ह्यूमनिस्ट' आंदोलन को आकार देने और उसे बनाए रखने में उनके योगदान के माध्यम से आज भी जीवित है। उनका स्मारक, एम. एन. रॉय के स्मारक के साथ, देहरादून में मोहिनी रोड पर स्थित है, जो उनकी साझा बौद्धिक यात्रा का प्रतीक है।

उनके जीवन ने राष्ट्र, लिंग और नागरिकता की पारंपरिक सीमाओं को चुनौती दी। यूरोप में जन्मी एलन ने अपना जीवन भारत के बौद्धिक और राजनीतिक परिदृश्य को समर्पित कर दिया। उन्होंने ऐसे मानववाद को रूप दिया जिसमें फासीवाद-विरोध, तर्कवाद, नारीवाद और लोकतांत्रिक विचार एक साथ समाहित थे। उनके जीवन और कार्य को केवल एम. एन. रॉय की एक साथी के रूप में सीमित करके देखना, उनके योगदान को कम करके आंकना होगा।

वह एक ऐसी विचारक थीं जिन्होंने ' नव मानववाद' को एक निरंतर विकसित होने वाली दार्शनिक प्रणाली के रूप में सह-निर्मित और स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने लोकतांत्रिक दर्शन की कल्पना की जिसमें तर्क, स्वतंत्रता और नैतिक उत्तरदायित्व सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन को सुदृढ़ करते हैं। एलन के लेखन–जिनमें निबंध, भाषण और संपादकीय कार्य शामिल हैं–सामूहिक जीवन

को आकार देने में नैतिक और लोकतांत्रिक नागरिकता पर लगातार ज़ोर देते हैं। उन्होंने ऐसे लचीले बौद्धिक ढाँचे की परिकल्पना की थी जो बदलती ऐतिहासिक और सामाजिक परिस्थितियों के प्रति क्रियाशील हो।

उनके प्रमुख कार्य–जिनमें 'रैडिकल डेमोक्रेसी', 'द वर्ल्ड हर विलेज: सिलेक्टेड राइटिंग्स एंड लेटर्स ऑफ़ एलन रॉय' (शिवनारायण रे द्वारा संपादित और संकलित), 'फ्रॉम एब्सर्डिटी टू क्रिएटिव रैशनलिज़्म', और 'इन मैन्स ओन इमेज' (शिवनारायण रे के साथ सह-लिखित) शामिल हैं–मानव-केंद्रित दृष्टिकोण से उनके निरंतर प्रयास को दर्शाते हैं। इन सभी में, वह यह कहती हैं कि लोकतांत्रिक जीवन तर्कशील और नैतिक व्यक्तियों के निर्माण पर निर्भर करता है। उनके लेखन 'रैडिकल ह्यूमनिज़्म' की चिंताओं का ही विस्तार करते हैं।

एक विश्व-दृष्टिकोण नारीवादी के तौर पर, उन्होंने अतार्किकता, अंधविश्वास, धार्मिक कट्टरता, पितृसत्ता, साम्राज्यवादी प्रभुत्व, और सभी प्रकार के ढांचागत और वैचारिक नियंत्रणों को चुनौती दी–ये वे ताकतें थीं जो स्वतंत्रता के लिए मानव की खोज में बाधा डालती थीं। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय आंदोलनों में अपनी भागीदारी के माध्यम से साम्राज्यवाद और फासीवाद का भी सामना किया। भारत के साथ उनका जुड़ाव किसी बाहरी व्यक्ति जैसा नहीं था, बल्कि पुनर्निर्माण के लिए लोकतांत्रिक संघर्षों में एक समर्पित भागीदार जैसा था।

फिर भी, जहाँ एम. एन. रॉय को आधुनिक भारत के बौद्धिक इतिहासों में पहचान मिली, वहीं एलेन की भूमिका को स्वतंत्र बौद्धिक और राजनीतिक सहयोगी के रूप में स्वीकार किए जाने के बजाय, केवल एक समर्पित साथी तक सीमित कर दिया गया। यह असंतुलन एक व्यापक ऐतिहासिक पैटर्न को दर्शाता है, जिसमें महिलाओं के बौद्धिक और राजनीतिक श्रम पर पर्दा डाल दिया जाता है, और उनकी पहचान उनके पुरुष समकक्षों को दी जाती है।

कुमारी जयवर्धने ने दिखाया कि जिन महिलाओं ने राष्ट्रीय और सांस्कृतिक सीमाओं को पार किया, उन्हें संदेह की दृष्टि से देखा गया, मुख्यधारा के वृत्तांतों से मिटा दिया गया, या केवल सहायक भूमिकाओं तक सीमित कर दिया गया।

ऐतिहासिक पहचान केवल उन जानी-पहचानी हस्तियों के लिए आरक्षित थी जो राष्ट्रवादी श्रेणियों में फिट बैठती थीं; इसने एलेन जैसी बौद्धिक रूप से स्वतंत्र महिलाओं को सार्वजनिक स्मृति के हाशिए पर छोड़ दिया।

इसलिए, एलेन की विरासत को मजबूत करना एक ऐतिहासिक सुधार का कार्य है, और अंतर्राष्ट्रीय इतिहासों पर पुनर्विचार करने के लिए एक आवश्यक हस्तक्षेप है। उनके जीवन और कार्य ने दुनिया में राजनीतिक चिंतन, बौद्धिक श्रम और नारीवादी व्यवहार की सीमाओं को चुनौती दी। आज उन्हें याद करने का अर्थ है—एक तर्कसंगत, नैतिक और मुक्त मानवता के उनके दृष्टिकोण की चिरस्थायी प्रासंगिकता को पहचानना।

Ellen Roy with M.N. Roy file photo with Indian Renaissance Institute

निष्कर्ष: आज एलेन रॉय क्यों मायने रखती हैं

> "इसका (रेडिकल डेमोक्रेसी) मतलब है कि ज़्यादातर लोगों का हित... यह मांग करता है कि डेमोक्रेसी को फॉर्मल पॉलिटिकल से ज़रूरी इकोनॉमिक डेमोक्रेसी तक बढ़ाया जाए, पावर के अधिकार और मटेरियल फायदे लोगों के बीच बांटे जाएंगे। वे अब अलग-अलग शासकों या रूलिंग क्लास के खास अधिकार नहीं रहेंगे।"

एलेन की इंटेलेक्चुअल और पॉलिटिकल ज़िंदगी यह दिखाती है कि कैसे मेनस्ट्रीम इतिहास जाने-माने पुरुष विचारकों के पक्ष में महिलाओं के बड़े योगदान को मिटा देता है। उनके मामलों को हाईलाइट करते हुए, यह तर्क है कि इंटेलेक्चुअल मूवमेंट को आकार देने में महिलाओं की अहम भूमिका को समझने के लिए ऐतिहासिक तथ्यों की फिर से जांच होनी चाहिए।

एलेन रेडिकल ह्यूमनिज़्म (नव मानववाद) की को-आर्किटेक्ट थीं। उन्होंने मूवमेंट के बनने, इंस्टीट्यूशनलाइज़ेशन, डॉक्यूमेंटेशन और बचाव में अहम भूमिका निभाई। अपनी राइटिंग और ऑर्गेनाइज़ेशनल काम के ज़रिए, उन्होंने तर्क, रैशनैलिटी, डेमोक्रेसी और आज़ादी पर आधारित विज़न को आगे बढ़ाया।

रेडिकल ह्यूमैनिज़्म को एक कोलेबोरेटिव प्रोजेक्ट के तौर पर समझा जाना चाहिए। एलेन ने सीधे तौर पर अंधविश्वास और असमानता का सामना किया। भारत में एक यूरोपियन मूल की इंटेलेक्चुअल के तौर पर, उन्होंने कॉस्मोपॉलिटन ह्यूमैनिज़्म को अपनाया। एलेन के कॉस्मोपॉलिटन फेमिनिज़्म ने महिलाओं की एजेंसी को आज़ादी के बड़े संघर्षों के साथ जोड़कर देखा और कहा कि महिलाओं को बराबर हिस्सा लेना चाहिए। उन्होंने नारीवाद को पहचान के सवालों तक सीमित रखने के बजाय एक मुक्तिदायक विज़न के अंदर रखा।

नव मानववाद में एलेन के योगदान में जर्नल्स, स्टडी सर्कल्स, ऑर्गनाइज़ेशन्स और इंटरनेशनल नेटवर्क्स के ज़रिए विचारों को संस्थागत करने की कोशिशें शामिल थीं। यह पहलू दिखाता है कि उनकी विरासत शिक्षा, कम्युनिकेशन और कलेक्टिव ऑर्गनाइज़ेशन के तरीकों पर आधारित थी।

इन योगदानों के बावजूद, एलेन को एम. एन. रॉय के साथ उनके जुड़ाव ने उनके काम को दबा दिया है। क्रिटिकल स्कॉलरशिप नेशनलिस्ट पुरुष हस्तियों को प्रायोरिटी देती है, और एलेन जैसी महिला इंटेलेक्चुअल्स को नज़रअंदाज़ करती है। उनके कीमती योगदान के बावजूद, उन्हें असरदार ऐतिहासिक फ्रेमवर्क में किनारे कर दिया गया।

उन्होंने डेमोक्रेसी, तर्क और सम्मान पर आधारित भविष्य की कल्पना करने के लिए भौगोलिक और विचारधारा की सीमाओं को पार किया। उनका रास्ता राष्ट्रवादी इतिहास और डीकोलोनाइजेशन फ्रेमवर्क की सीमाओं को उजागर करता है, जो उन लोगों को ध्यान में रखने में नाकाम रहे जिनकी ज़िंदगी और विचार देश और सांस्कृतिक जुड़ाव की तय कैटेगरी से आगे निकल जाते हैं।

एलन की विरासत बदलाव का एक ऐसा मॉडल पेश करती है जिसने सभी सीमाओं को खारिज कर दिया। इसलिए, उनकी बौद्धिक और राजनीतिक विरासत को मजबूत करने के लिए रेडिकल ह्यूमनिज्म (नव मानववाद) को समझने के तरीके में बदलाव की ज़रूरत है। ऐसे आंदोलनों को किसी एक जीनियस की रचना के बजाय, सीमाओं के पार सहयोग, बातचीत और साझा कमिटमेंट से बने सामूहिक बौद्धिक गठन के रूप में पहचाना जाना चाहिए।

एलन को पहचानना ये मानना है कि डेमोक्रेटिक बदलाव क्षेत्रीय या सांस्कृतिक सीमाओं के पार विचारों, रिश्तों और मानसिक फ्रेमवर्क को बदलने पर निर्भर करता है। उनका काम डेमोक्रेसी, आज़ादी और न्याय के बारे में सोचने का एक सुग्रथित इंटीग्रेटेड तरीका सुझाता है। उन्होंने आज़ादी को एक रचनात्मक प्रक्रिया के रूप में देखा। आज की बढ़ती तानाशाही दुनिया में उनका फ्रेमवर्क व्यक्तिगत आज़ादी

को सामूहिक ज़िम्मेदारी से जोड़ता है, और इस बात पर ज़ोर देता है कि डेमोक्रेसी को रोज़ाना की भागीदारी, शिक्षा और तर्क के ज़रिए जीना चाहिए।

बढ़ती असमानता और ध्रुवीकरण वाले माहौल में, तर्कसंगत जांच, reasonable inquiry डीसेंट्रलाइज़्ड शासन और इंसानी राजनीति पर उनका ज़ोर लोकतांत्रिक जीवन की पुनर्कल्पना के लिए मूल्यवान दृष्टिकोण प्रदान करता है। साथ ही, लैंगिक न्याय, आर्थिक परिवर्तन और राजनीतिक स्वतंत्रता पर उनका आग्रह समकालीन 'इंटरसेक्शनल' दृष्टिकोणों की झलक देता है, जिससे उनके विचार नारीवाद और शासन-प्रशासन पर चल रही मौजूदा चर्चाओं के लिए प्रासंगिक हो जाते हैं।

Ellen in the USA in 1955

Photo courtesy: From the World Her Village, Edited by Sibnarayan Ray

References

Ellen Gottschalk Roy (1904- 1960) https://humanists.uk/2022/01/27/jewish-and-humanist-secular-jews-who-helped-shape-the-humanist-movement-in-britain/

Jasthi Jawaharlal (2013) *Mrs. Ellen Roy: A Life Dedicated to New Humanist Movement* https://indianrenaissanceinstitute.com/wp-content/uploads/2024/05/Mrs.Ellen_.Eng_.pdf

Kumari Jayawardena (1995) *The White Woman's Other Burden: Western Women and South Asia During British Colonial Rule,* Routledge, New York

Malik, K. (1981) Review of *The World Her Village (A Book of Ellen Roy)*, by S. Ray. *Indian Literature*, *24*(1), 147–151.

The Nehru Archives https://nehruarchive.in/people/ellen-roy

Nigam Shalu (2025) Resisting Gendered Citizenship: The Politics of Colonialism, Nationalism, and Maternalism in India, *Gender and Women Studies*, 6(1) 1-25 DOI: 10.31532/GendWomensStud.6.1.001

Nigam Shalu (2026) *Women's Emancipation and Feminist Praxis: Reclaiming the Radical Legacy of MN Ro*y, Indian Renaissance Club, Delhi NCR

Ray Sibnarayan (1979) *The World Her Village: Selected Writings and Letters of Ellen Roy*, Ananda Publishers Pvt Lt. Calcutta

Roy Ellen Gottschalk (1948) *In Man's Own Image*, Renaissance Publishers, Calcutta (Co-authored with Sibnarayan Ray)

Roy Ellen Gottschalk and S Ray (1948) *In Man's Own Image*, Renaissance Publishers, Calcutta

Roy MN (1943) *Fragments of a Prisoner's Diary: Letters from Jail, Volume 3*, Indian Renaissance Institute, Dehradun

Simonow Joanne (2024) Sexing the History of Indian anti-colonial Internationalism: White Women, Indian Men and Politics of Personal, *Gender and History*, 1-17 DOI: 10.1111/1468-0424.12801

The Times (1960) *Murder of Mrs. Roy investigated,* December 19, https://go.gale.com/ps/i.do?p=TTDA&u=nl_earl&id=GALE%7CCS118316947&v=2.1

लेखिका के बारे में

शालू निगम एक नारीवादी वकील और शोधकर्ता हैं, जो भारत में लिंग, कानून, शासन और मानवाधिकारों के क्षेत्र में काम करती हैं। सोशल वर्क में PhD और कानून की डिग्री के साथ, वह वकालत करती हैं और विभिन्न मानवाधिकारों तथा महिलाओं के अधिकारों से जुड़े आंदोलनों और शोध संगठनों, जैसे कि पीपल्स यूनियन फॉर सिविल लिबर्टीज़, इंडियन सोशल इंस्टीट्यूट, इंपैक्ट एंड पॉलिसी रिसर्च इंस्टीट्यूट (दिल्ली), इंडियन रेनेसां इंस्टीट्यूट और सेंटर फॉर वीमेन डेवलपमेंट स्टडीज़ के साथ सक्रिय रूप से जुड़ी हैं। वह 'वी द पीपल नेटवर्क' और 'इंडियन रेनेसां क्लब' की संस्थापकों में से एक रही हैं। उन्हें 'इंडियन काउंसिल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च' द्वारा एक वरिष्ठ फेलोशिप से सम्मानित किया गया। उनकी प्रकाशित रचनाओं में शामिल हैं:

- भारत में घरेलू हिंसा कानून: एक व्यक्ति को क्या जानना चाहिए;
- आपके सूचना के अधिकार के बारे में;
- भारत में महिलाएं और घरेलू हिंसा कानून: न्याय की तलाश;
- भारत में घरेलू हिंसा कानून: मिथक और स्त्री-द्वेष;
- दहेज एक गंभीर आर्थिक हिंसा है: भारत में दहेज कानून पर पुनर्विचार;
- अकेली मांएं, पितृसत्ता और नागरिकता: सामाजिक-कानूनी दृष्टिकोण से अकेली मां होने पर पुनर्विचार;
- भारत में रोज़मर्रा के जीवन में मानवाधिकार: एक व्यवहारिक दृष्टिकोण;
- UDHR (मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा) के निर्माण में दक्षिण एशियाई महिलाओं की भूमिका;
- भारत में एक समावेशी और लिंग-न्यायपूर्ण संहिता की ओर: महिलाओं के अधिकार गैर-समझौता योग्य हैं;
- स्वतंत्रता की अवधारणा: भारत की संविधान सभा के लिए एम.एन. रॉय की क्रांतिकारी रूपरेखा;
- मानवीय गरिमा का त्रय: 3P प्रगतिशील दार्शनिक व्यवहार प्रतिमान: मानवतावाद, मानवाधिकार और व्यवहार का एकीकरण;
- महिलाओं की मुक्ति और नारीवादी व्यवहार: एम.एन. रॉय की क्रांतिकारी विरासत;
- घरेलू दायरे से परे: सुरक्षित और समतापूर्ण घरों के लिए गृह विज्ञान शिक्षा की पुनर्कल्पना;

उन्होंने 'द फाउंडिंग मदर्स: 15 वीमेन आर्किटेक्ट्स ऑफ द इंडियन कॉन्स्टिट्यूशन' नामक पुस्तक का सह-लेखन भी किया है।

इसके अतिरिक्त, वह नियमित रूप से विभिन्न पत्रिकाओं और ब्लॉगों में अपने लेखों का योगदान देती हैं।